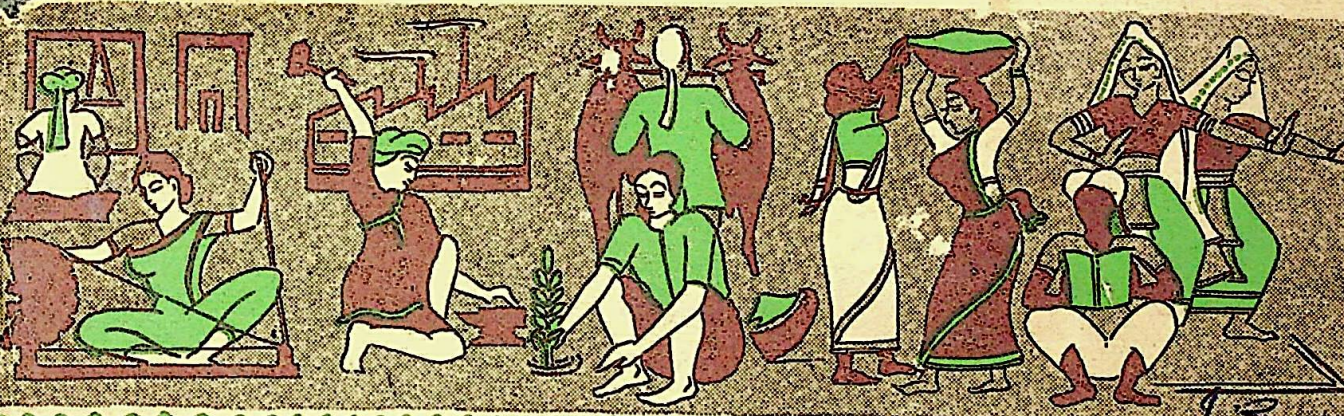

नया भारत

H.S. 908
V2 152K1
1613
SC
14/2/22

जवाहरलाल नेहरू

प्रगति के पथ पर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कृपया यह ग्रन्थ नीचे निर्देशित तिथि के पूर्व अथवा उक्त तिथि तक वापस कर दें। विलम्ब से लौटाने पर प्रतिदिन दस पैसे विलम्ब शुल्क देना होगा।

V2
152K1

प्रगति के पथ पर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मुमुक्षु भवन वेद वेदाङ्ग पुस्तकालय, वाराणसी।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

V2
152K1

१२०७८

प्रगति के पथ पर

१

नया भारत

जवाहरलाल नेहरू

सस्ता साहित्य मंडल-प्रकाशन

१९६१

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रकाशक
मार्तण्ड उपाध्याय
मंत्री, सस्ता साहित्य मण्डल
नई दिल्ली

V2
152K1

चौथी बार : १९६१
[redacted] —/६)

वेद वेदाङ्ग पुस्तकालय
आगत क्रमांक 1809
दिनांक

मुद्रक
हीरा आर्ट प्रेस
दिल्ली

विषय-सूची

१. आजादी और हमारी जिम्मेदारी ५
२. स्वराज्य का अर्थ १०
३. नया भारत २०
४. बड़े सवाल ३१
५. 'आराम हराम है' ४२

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

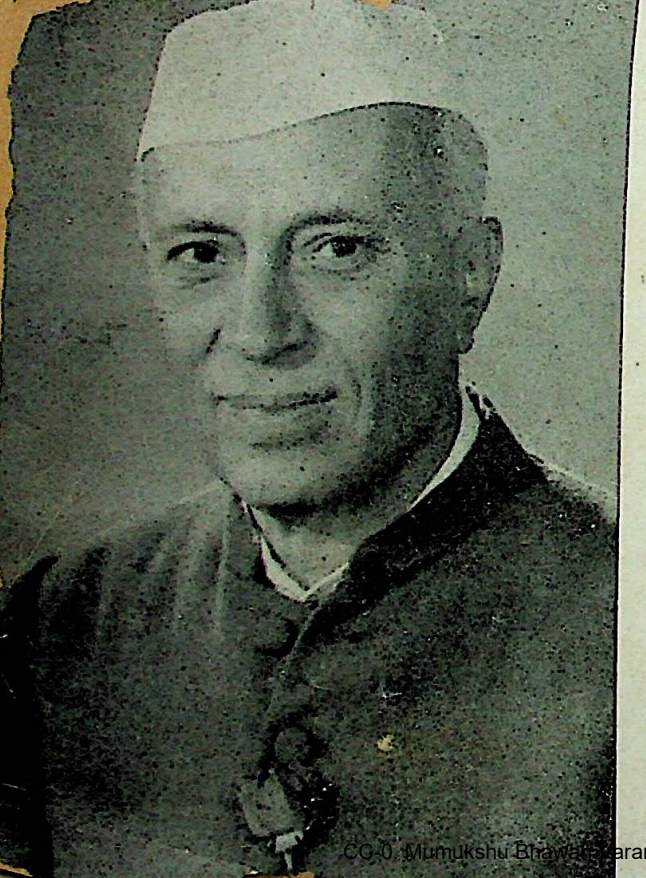

नये भारत

के

निर्माता

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रकाशकीय

हमारे देश को आजाद हुए आठ साल हो चुके हैं। इन सालों में हमारे यहां क्या-क्या काम हुआ है, क्या-क्या हो रहा है, देश के सामने क्या-क्या मुसीबतें थीं और हैं, उनमें से कौन-कौन-सी, कैसे-कैसे दूर हुईं, कौन-कौन-सी दूर होने को हैं, देश इन आठ सालों में कितना आगे बढ़ा है —इन तथा ऐसी ही दूसरी बातों के बारे में बहुत कम लोगों को सही जानकारी है।

यह नई पुस्तक-माला हमने इसलिए शुरू की है कि आजादी के इन वर्षों में देश में सरकार, कांग्रेस तथा अन्य सार्वजनिक संस्थाओं द्वारा जो काम हुआ है, या जो हो रहा है, उसकी पूरी और सही जानकारी देशवासियों को हो जाय। इसमें शक नहीं कि इन बरसों में काफी काम हुआ है और यही रफ्तार रही तो आगे और भी तेजी से उन्नति होगी; लेकिन सबसे बड़ी जरूरत इस बात की है कि हमारे देशवासी इन कामों को और इनके महत्व को समझें और अपनी पूरी सामर्थ्य से इनको आगे बढ़ाने में योग दें। देश को बनाने या बिगाड़ने की जिम्मेदारी अब किसी और पर नहीं है, यहां के छत्तीस करोड़ निवासियों पर है। यदि सब संगठित शक्ति से काम करें तो कुछ ही समय में देश का कायाकल्प हो सकता है।

इस माला की पुस्तकों में हम यह भी बता रहे हैं कि अभी कितना काम होने को शेष है। हमारा उद्देश्य गांधीजी द्वारा बताये लक्ष्य की ओर उत्तरोत्तर अग्रसर होना है और जबतक हम उस लक्ष्य तक नहीं पहुंच जाते तबतक हमारी यात्रा पूरी नहीं हो सकती।

इस माला की पहली पुस्तक में हमने भारत के एक ऐसे महापुरुष के चुने हुए महत्वपूर्ण विचारों को उन्हींकी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सरल-सुबोध भाषा में दिया है, जिन्होंने देश को स्वतन्त्र कराने में महत्वपूर्ण भाग लिया था, जो मानव-प्रेम से ओतप्रोत हैं, जो स्वतंत्र भारत की बागडोर मजबूती से संभाले हुए हैं और जो विश्व-शांति की स्थापना का दिन-रात चिंतन ही नहीं करते, बल्कि उस दिशा में मजबूत कदम भी उठा रहे हैं। दूसरी पुस्तक में आठ वर्ष में हुए काम का संक्षेप में सिंहावलोकन दिया है। उसके पश्चात् विभिन्न कार्यों की प्रगति पर अलग-अलग कई पुस्तकों में प्रकाश डाला है।

इन पुस्तकों की छपाई मोटे टाइप में कराई गई है और भाषा सरल रखी गई है, जिससे कम पढ़े-लिखे लोग भी आसानी से समझ सकें। साथ ही दाम भी कम रखा गया है, जिससे लोग इन्हें सहज ही खरीद सकें।

हम चाहते हैं कि प्रत्येक भारतवासी इन पुस्तकों को पढ़े और देश के नवनिर्माण के कार्य में योग दें।

चौथा संस्करण

हमें हर्ष है कि थोड़े-से समय में ही पुस्तक का चौथा संस्करण पाठकों के हाथों में पहुंच रहा है। आशा है, पाठक इस माला की सब पुस्तकों को चाव से पढ़ेंगे।

— मंत्री

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नया भारत

: १ :

आजादी और हमारी जिम्मेदारी

नियत दिन आ गया है—वह नियत दिन, जिसे किस्मत ने तय किया था। हिंदुस्तान ने फिर लंबी नींद और कोशिशों के बाद आंखें खोली हैं और वह मजबूत और आजाद हुआ है। हमारे लिए नया इतिहास शुरू होता है—वह इतिहास, जो हमारी जिंदगी और हमारे कामों से रचा जायगा।

हमें अपनी आजादी से आनंद है, हालांकि हमारे चारों तरफ बादल घिरे हुए हैं। अपने लोगों में बहुत-से तकलीफ के मारे हैं और मुश्किल समस्याएं हमारे सामने मौजूद हैं। लेकिन आजादी अपनी जिम्मेदारियां और बोझ लाती है और हमें आजाद और अनुशासनपूर्ण लोगों की तरह उनका मुकाबला करना है।

आजादी दिलानेवाले राष्ट्रपिता का हमें ध्यान आता है, जो हिंदुस्तान की पुरानी भावना के जीते-जागते रूप होकर आजादी की मशाल ऊंची किये हुए थे और जिन्होंने हमारे चारों तरफ फैले हुए अंधेरे को दूर किया था। हम अक्सर उनके नाकाबिल अनुयायी रहे हैं और उनके संदेश से दूर पड़ गये हैं; लेकिन हम ही नहीं, आनेवाली पीढ़ियां इस संदेश को याद रखेंगी और अपने दिल पर भारत के इस बड़े सपूत की

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

छाप को धारण करेंगी, जो कि अपने विश्वास, ताकत, हौसले और नम्रता में इतना महान था।

आजादी की इस मशाल को, चाहे जैसी आंधी और तूफान आवे, हम कभी बुझने न देंगे।

(१५ अगस्त, १९४७)

एक जबरदस्त सफर हमने किया। यह स्वराज्य की बड़ी यात्रा थी और यह यात्रा दो-चार आदमियों को नहीं, बल्कि करोड़ों को करनी थी। आखिर मंजिल पर हम पहुंचे। पहुंचते ही फौरन दूसरी मंजिल सामने आ गई—दूसरी मंजिल हिंदुस्तान को आगे ले जाने की मंजिल, और वह भी छत्तीस करोड़ आदमियों के साथ यात्रा। याद रखिये, हमारे हम-सफर छत्तीस करोड़ हैं, हम अलग निकलकर कहीं नहीं जा सकते। छत्तीस करोड़ के साथ कदम मिलाकर हमें चलना है। कभी हम उनको खींचकर आगे लावें, कभी वे हमें ढकेलें, लेकिन हमेशा साथ चलना है।

हमारे सामने एक जबरदस्त सवाल है और वह यह कि हमें इस पुराने हिंदुस्तान को उठाना है, अपनी टांगों पर खड़ा करना है और आगे बढ़ाना है। शायद टांगों पर हम खड़े हो गये हैं, कुछ आगे बढ़े हैं, मगर हमें और तेजी से आगे बढ़ना चाहिए।

हममें कुछ खूबियां हैं और काफी कमजोरियां भी हैं, अगर हम और कौमों का मुकाबला किया चाहते हैं तो हमें ज्यादा चुस्ती और होशियारी दिखानी होगी और ज्यादा सख्ती की बर्दाश्त हममें होनी चाहिए। कमजोर दिलवाले और कमजोर शरीरवाले आगे नहीं बढ़ते हैं। आजकल की दुनिया में तगड़े दिल, दिमाग और मेहनती लोग आगे बढ़ते हैं। हमें मेहनत के आंसू नहीं टपकाने हैं, बल्कि हँस-हँसकर बढ़ना है। हमें नाचते और गाते हुए बढ़ना है। हम सैकड़ों बरस तक अंग्रेजों के बंधन में बंधे रहे। इस जमाने में दूसरी कौमें आगे बढ़ीं, उन्होंने तरक्की की, उनकी हर किस्म के इल्म की, विज्ञान की ताकत बढ़ी, तरक्की हुई, फौजी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ताकत बढ़ी। अपने इल्म से नये हथियार उन्हें मिले, पर हम पुराने खयालों में पड़े रहे, पुराने ख्वाबों को देखते रहे। बार-बार बाहर से लोग आये। उन्होंने हमारे मुल्क पर कब्जा किया, हुकूमत की, इसलिए कि हम पुराने खयालों में डूबे थे। दुनिया बदलती जाती थी और हम उस नई दुनिया को नहीं समझते थे।

हमारे मुल्क के लिए यह खतरनाक बात है। जब हम बदलती दुनिया को देखें और समझें तो दो खतरे हमारे सामने आते हैं : एक तो यह कि हम यह समझें कि हम बहुत लायक हैं, बहुत ऊंचे दर्जे के हैं, बहुत ऊंचे पहुंचे हुए हैं, इसलिए औरों से सीखना नहीं है। दूसरा खतरा यह है कि हम औरों की नकल करें और बाहरी तौर से झूठे नमूने बनें। आम तौर से हम बाहरी नमूने बनते हैं। अंदर के नमूने बनें तो शायद कुछ फायदा भी हो। पोशाक में, तर्ज में, देखभाल में, बाहरी बनते है, असली नकल नहीं कर सकते। फर्ज कीजिये कि हम यूरोप के बाशिंदों की तरह कोट-पतलून पहनें, पहनना कुछ हर्ज नहीं है; लेकिन कौमें अपने दिल-दिमाग से बढ़ती हैं, पोशाक और दिखावे की चीजों से नहीं।

हिंदुस्तान की जो कदर है, वह एक नंगे आदमी की वजह से है। गांधीजी ने हिंदुस्तान की कदर बढ़ाई। उस दुबले-पतले आदमी ने हिंदुस्तान की गिरी हुई कौम को उठाकर इतना ऊंचा किया। हम जैसे मामूली हैसियत के लोगों को भी उन्होंने कुछ हिम्मत दी, हममें भी उनकी आग की कुछ चिनगारी पड़ी। हमने उनसे सीखकर थोड़ा-बहुत किया।

इस तरह से कौमों में हिम्मत आती है, ताकत आती है। हमें इन दो बातों से बचना है : एक तो यह कि अपनेको घेरे के कुएं का मेंढक बनाकर सिर्फ अपने अंदर रहे, दूसरों से कुछ न सीखें और बढ़ते हुए वक्त की धारा को न पहचानें। दूसरे यह कि औरों की नकल करें और भूल जायं कि हम इस हिंदुस्तान की मिट्टी की पैदायश हैं, इस मिट्टी के बने हैं, हमें यहीं रहना है, और यहीं कुछ करके दिखाना।...

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आजादी का बोझ हममें से एक-एक आदमी को उठाना है, इस मुल्क के एक-एक आदमी को। अगर आप न उठायें, तो मैं अकेले थोड़े उठा सकता हूं। उठाने के मानी हैं, आपको आजादी की जिम्मेदारियां समझनी हैं। आजादी खाली हक नहीं है, हक तो वह है, लेकिन हर हक के साथ जिम्मेदारी है। उसे समझना है और हमें मिलकर अपने मुल्क को आगे बढ़ाना है, एकता रखनी है, आपस के खाने हटाने हैं, आपस की जहालत, जो एक-दूसरे को लड़ा देती है—चाहे मजहब के नाम पर, चाहे जात के नाम पर—छोड़नी है। अपने-अपने मजहब पर रहने का हरेक को हक है। लेकिन और कामों में हमें मिलकर चलना है और काम करना है। वगैर काम के मुल्क आगे नहीं बढ़ता। आपकी चाहे जैसी नीति हो, वगैर काम और मेहनत के वह आगे नहीं बढ़ेगी।

चाहे आप अमरीका को देखें, जर्मनी को देखें, जापान को देखें, रूस को देखें, चीन को देखें, वहां अलग-अलग पालिसी चल रही है; लेकिन हरेक के पीछे मेहनत है, अजहद मेहनत, क्योंकि और कोई जरिया काम करने का नहीं है। हमें इस मुल्क में हजारों चीजें बनानी हैं। हर शहर को, हर गांव को बदलना है। यह कैसे हो ? कोई कानून से तो हर चीज हो नहीं जाती। करोड़ों आदमी जब काम करना शुरू करते हैं तो मुल्क का चेहरा तेजी से बदलने लगता है। वह हमें करना है। (१५ अगस्त, १९५४)

आपको जो आजादी मिली, वह बहुत कीमती चीज है। उसके लिए लाखों-करोड़ों आदमियों ने कुर्बानी की थी, ख्वाब देखे थे। लेकिन हमें मिल गई तो हम जल्दी से उसके आदी हो गये और भूल गये कि वह कितनी कीमती चीज है। कीमती चीज, हक, के साथ जिम्मेदारी भी होती है।

आजादी का बोझा और जिम्मेदारी आपको ओढ़नी है। इसके एक मानी तो यही हैं कि उस आजादी को बचाना है, उसकी रक्षा करनी है। रक्षा करने के मानी यह नहीं हैं कि फौज जाकर सड़क पर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बैठकर रक्षा करे। अगर कोई खतरा हो तो वह भी उसके मानी हैं। लेकिन मुल्कों की रक्षा खाली सड़क से नहीं होती, बल्कि हर गांव में, हर शहर में, हर सड़क, हर बाजार और हर खेत में होती है। जैसी मुल्क की हालत होगी, जितना तगड़ा बनेगा, वह उतना ही मजबूत होगा।

अब यह बात नहीं है कि आप कहें कि पहले जिम्मेदारी अंग्रेजी हुकूमत की थी और अब जो हुकूमत दिल्ली में है या लखनऊ में है, उसकी है। यह ठीक नहीं है। जिम्मेदारी हिंदुस्तान के लोगों की हो गई है, क्योंकि अगर हमारे यहां, जिसको अंग्रेजी में डेमोक्रेसी (जनतंत्र) कहते हैं, वह है, आम लोगों और जनता का राज है, जनता के हाथ में आखिर में बागडोर है, तो फिर जिम्मेदारी सारी जनता की हो जाती है। इसके मानी यह नहीं कि हरेक गलती जो मुझसे हो, उसके आप जिम्मेदार हैं। लेकिन आम जिम्मेदारी आप लोगों की ही है, हिंदुस्तान में रहनेवालों की। (२६ मार्च, १९५४)

यह कोई छोटी बात नहीं है कि हमने ३६ करोड़ आबादीवाले इस मुल्क को बनाने का काम हाथों में लिया है। यह अहम काम है, जिसे करने के लिए बहुत बड़ी ताकत चाहिए। हमारी जिम्मेदारी है कि इस काम को हम ठीक तरीके से और ठीक जरियों की मदद से आगे बढ़ावें और कभी दिल न तोड़ें। मैं चाहता हूं कि हिंदुस्तान दुनिया के सबसे शानदार मुल्कों में से एक बने। सालों से हमारा फर्ज रहा है कि हम हिंदुस्तान की आजादी के लिए मेहनत करें। यही फर्ज था, जिसने हमें ताकत दी। आज भी हमारे सामने बड़ा भारी काम है। हमें इससे ताकत हासिल करके अखीर तक इसीके लिए मेहनत करनी चाहिए।

(२४-१-५४)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

: २ :

स्वराज्य का अर्थ

हमारे देश में आजादी को आये सात वर्ष हुए, लेकिन स्वराज्य के माने क्या ? स्वराज्य की यात्रा सफर की आखिरी मंजिल नहीं है। स्वराज्य के आने पर हमें खामोश नहीं बैठना चाहिए। स्वराज्य के आने पर, मुल्क के आजाद होने पर, कोई चीज खत्म नहीं होती। वह तो मुंल्क की तरक्की का, इस नई यात्रा का पहला कदम होता है। स्वराज्य या किसी मुल्क की आजादी कभी पूरी नहीं होती, वह आगे बढ़ती जाती है।

आजादी का मतलब खाली राजनैतिक आजादी नहीं है। स्वराज्य और आजादी के माने कुछ और भी हैं। सामाजिक आजादी है, आर्थिक है। अगर देश में गरीबी है तो आजादी नहीं पहुंचती वहांतक। उसे आजाद नहीं किया गया, इसीसे वे गरीबी के फंदे में, दूसरे देश के अधीन हैं। जो फंदे में होते हैं, उनका स्वराज्य नहीं होता। उसी तरह अगर हम बंटे हुए हैं आपस के झगड़ों में, आपस के बीच वैर है, आपस की दीवारें हैं, हम एक-दूसरे से मिलकर नहीं रहते हैं, तब भी हम पूरी तौर पर आजाद नहीं हुए।

अगर हिंदुस्तान को पूरी तौर पर आजाद होना है तो बहुत बातें करनी हैं। हिंदुस्तान को अपने करोड़ों आदमियों की बेरोजगारी दूर करनी है, गरीबी दूर करनी है।...अगर किसी गांव में किसीको कोई रुकावट है, जाति की, खाने-पीने की, रहने-चलने की, तो वह गांव अभी आजाद नहीं हुआ। हमें इस देश के एक-एक आदमी को आजाद करना है। देश की आजादी कुछ लोगों की खुशहाली से नहीं देखी जाती है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

देश की आजादी आम लोगों की रहन-सहन, तरक्की के मौकों और तकलीफ या आराम से देखी जाती है।

हम अभी आजादी के रास्ते पर हैं। यह न समझिये कि मंजिल पूरी होगई। वह अभी पूरी नहीं हुई। एक जिंदादिल देश आगे बढ़ता जाता है। हम तरक्की करेंगे, हमें आगे बढ़ना है। दुनिया को बढ़ाना है। ...इसी तरह दुनिया में इन्कलाब हो जाता है। हमारी ताकत और कमजोरी हमारे घर के कामों पर है। अगर हम घर पर ऊंचे उसूलों पर चलते हैं तो दुनिया में हमारी शान है। अगर नहीं चलते तो हमारी बात फिजूल है। आजकल हिन्दुस्तान का पैगाम यह है कि हिन्दुस्तान में एक-एक आदमी को सियासी तौर से बराबर होना है, सामाजिक तौर से बराबर होना है, जहांतक मुमकिन हो, आर्थिक तौर से बराबर होना है। ऊंच-नीच निकम्मी चीज है, चाहे वह पैसों की हो या सामाजिक रस्मों-रिवाजों की।

स्वराज्य हासिल करने के बाद हमारा बड़ा काम यह है कि हम इस मुल्क की आर्थिक स्थिति को ठीक करें, आगे बढ़ावें। बेकारी के या गरीबी के जो बड़े-बड़े सवाल हैं, उनको हल करें। वे एकदम तो हल नहीं हो सकते। बड़ी मेहनत से कदम आगे बढ़ता है, और जो खुशहाल मुल्क आजकल हैं, आप उनके इतिहास को देखें कि वे खुशहाल कैसे हुए, किन मुसीबतों से आगे बढ़े। अंग्रेजों का मुल्क है, जो कि इंतहा दर्जे दौलत-मंद हो गया। वहां बड़े-बड़े उद्योग-धंधे और कारखाने बढ़े, तरक्की की और एक साम्राज्य उन्होंने बनाया। अगर आप उनके सौ वर्ष पहले के इतिहास को देखें तो कितना जुल्म वहां की आम जनता पर हुआ था, जो काम करते थे, मजदूर थे, उस मुल्क में खास नहीं, और मुल्कों में भी ऐसा होता था, दूसरों पर सख्ती करके उन्होंने अपने मुल्क की तरक्की की, यह याद रखने की बात है। अब उनकी तरक्की होगई, यह और बात है। अमरीका में डेढ़सौ बरस में धीरे-धीरे बढ़े। अमरीका का खाली मैदान उनके लिए था और

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ऐसा मौका कब मिलना था। अब उनकी बड़ी ताकत है। डेढ़सौ बरस बाद उन्होंने तरक्की की—विज्ञान में, व्यापार में, हजार बातों में, कमाल की तरक्की की। रूस है, जहां पैंतीस-छत्तीस बरस पहले बड़ी क्रांति हुई थी। क्रांति के पंद्रह साल बाद, आप देखें, बुरा हाल था। वहां के लोग बड़ी मुसीबत में थे। हलके-हलके वे उसमें से निकले। हलके-हलके उन्होंने अपनी बुनियाद बनाई और उसपर अपनी इमारत खड़ी की। मेरा मतलब यह है कि कोई जरिया नहीं है—जादू से या तेजी से—एक मुल्क की शक्ल बदल देने का, एक मुल्क को खुशहाल करने का। आखिर में मुल्क खुशहाल होते हैं, मुल्क की पैदावार से। कहीं बाहर से तो पैसा आयेगा नहीं। मुल्क में जो पैदा होता है, चाहे कारखाने से, चाहे घरेलू धंधे से, वह मुल्क की दौलत होती है। जितना पैदा अधिक हो, उतनी अधिक दौलत होती है। अमरीका इस वक्त दौलतमंद है कि बेशुमार चीजें पैदा करता है, इतनी कि उसके यहां खपती नहीं। ऐसे नये तरीके उन्होंने कारखाने से निकाले हैं कि उनकी पैदावार बहुत बड़ी दौलत है। कोई रुपया, सोना, चांदी तो दौलत नहीं है। इसीलिए दुनिया में डालर का ज़ोर है क्योंकि अमरीका की चीजें हर जगह जाती हैं और वे खरीदते बहुत कम हैं कहीं और से। या दूसरे मुल्क को लीजिये। चीन है, बहुत बड़ा मुल्क है। उसके सामने बहुत बड़े जबरदस्त सवाल हैं। बाज बातों में हम अब भी उनके आगे हैं, बाज में वह हमारे आगे है। आइंदा देखा जाय कि कौन ज्यादा तेजी से बढ़ता है।

अपने मुल्क में हमने जो कुछ किया उसीसे काफी असर हुआ, क्योंकि आखिर में दुनिया हमारे काम से हमारा अंदाज करेगी। आपने देखा, दुनिया के सब मुल्कों से यहां काफी लोग आ रहे हैं। कभी-कभी हम उनको दावत देते हैं, लेकिन बहुत-से बगैर दावत के आते हैं। हर मुल्क से, एशिया से, यूरोप से, अमरीका से आते हैं, क्यों आते हैं ये लोग? इसलिए कि दुनिया में खबर फैली है कि हिंदुस्तान तेजी से बढ़ रहा है

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

और यहां एक बड़ी जबरदस्त बुनियाद डाली जा रही है मुल्क की तरक्की की, एक नये हिंदुस्तान, नये भारत के बनाने की। सवाल हमारे सामने चंद कारखाने बनाने का तो है नहीं, बल्कि आखिर में पैंतीस-छत्तीस करोड़ आदमियों के उठाने का है। जबरदस्त सवाल है। असल में वे लोग यहां जो बात देखते हैं वह है कि हिंदुस्तान के दिल में इस वक्त कितना जोश है, कितना कुछ करने की ख्वाहिशें हैं, दिमाग में बलबले हैं। यह नहीं कि वे हवाई चीजें हैं। पांच बरस की योजना है। यह एक बड़ा हिस्सा है उसका। हमने मुल्क के सारे सवालों को सामने रखकर देखा कि कितनी हमारी शक्ति है, काम करने की। याद रखिये जितनी ताकत है, उतना ही हम काम कर सकते हैं। ताकत के माने क्या हैं ? ताकत के माने सारी बातें हैं—सामान हमारे पास कितना है, पैसा कितना है, हमें जो काम करना है उसके लिए हमें किस-किस चीज की जरूरत है, कितने लोहे की जरूरत है, कितने इस-उस सामान की जरूरत है। कितना है? अगर नहीं है तो उसको हम बनावें। उधर आप हमारे सारे देहातों के किसानों और जमींदारों के काम को लीजिये। कैसे हम जमीन की पैदावार बढ़ावें ? कैसे हम जमीन के कानूनों को बदलें ताकि जो काम करता है, उससे उसको फायदा हो, जमींदारी प्रथा खतम हो, जागीरदारी वगैरा भी। तो सारे सवालों को देखकर किधर हम जायं—यह एक बुनियादी सवाल उठता है। यूरोप और अमरीका बढ़े हैं। कैसे बढ़े हैं पिछले डेढ़सौ वर्ष में, दोसौ वर्ष में ? वे बड़े इसलिए बने कि उनको एक कुंजी मिली विज्ञान की, जिसमें उन्होंने बहुत सारे ताले आंखों के खोले और वे आगे बढ़ते गये। उससे उसकी ताकत बढ़ी। हर तरह की दौलत पैदा की। फौजों की ताकत बढ़ी, हथियार मिले। ये सब बातें हुईं और वे दुनिया में फैल गये। हमें भी उस ताले को खोलना है। कुंजी को ढूंढ़ना है। इसलिए शुरू से ही हमने सोचा कि अगर हिंदुस्तान को तरक्की करनी है तो यह जरूरी बात है कि साइंस की, विज्ञान की, बुनियाद हो, और हमने नक्शा बनाया कि हिंदुस्तान भर में बड़ी-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बड़ी उद्योगशालाएं, वैज्ञानिक अन्वेषण-शालाएं खोली जायं। वैसे तो छोटी-मोटी बहुत सारी थीं, पर हमने बड़ी-बड़ी खोलीं, जिससे हम उस रास्ते को ढूंढ़ें, जिससे हम बढ़ सकें और जिससे हमें नये-नये तरीके मालूम हों, अपने उद्योग-धंधे और खेती वगैरा की तरक्की के, और हर तरह से मुल्क आगे बढ़े।

रुड़की में हमारी एक नई उद्योगशाला खुली है। वह ग्यारहवीं है। हमारा जो नक्शा था ग्यारह उद्योगशालाओं को खोलने का वह पूरा हुआ। उसके यह माने नहीं हैं कि हम अब और काम नहीं करेंगे। और भी हो रहे हैं, बन भी रहे हैं, लेकिन ग्यारह जो बड़ी-बड़ी उद्योगशालाएं खोलनी थीं वे खोल चुके। काफी बड़ा काम हुआ। और बातें आप छोड़ें, इसी बात को आप लें कि इतना बड़ा काम हुआ कि लोग बाहर से आते हैं और इन उद्योगशालाओं को देखते हैं और समझते हैं कि उनके पीछे क्या है? खाली इमारत थोड़े ही है। वहां हमारे हजारों नौजवान लड़के और लड़कियां काम कर रहे हैं। नई चीजें बना रहे हैं, नये-नये विचार पर गौर करते हैं और इस तरह हिंदुस्तान की तरक्की में मदद कर रहे हैं। बुनियादी बात है। जो लोग बाहर से आते हैं, उसको देखकर उनपर असर होता है कि इतना हमने किया और ऐसा हमने सोचा।

दिल्ली शहर में इधर-उधर से जो हमारे शरणार्थी आये उनके लिए पिछले ढाई वर्ष में पचास हजार मकान बने। मुमकिन है, वे बहुत ज्यादा खूबसूरत न हों, लेकिन बहरहाल बने हैं। यह छोटी बात नहीं है। हम तो चाहते हैं कि लाखों मजबूत और अच्छे मकान बन सकें। मुश्किल यह है कि पिछले चंद बरस में दुनिया भर में मकानों के बनाने की कीमत तिगुनी हो गई है। तलाश होती है कि कैसे नये तरीके हैं, जिससे अच्छे मकान बनें और सस्ते हों और उसी सामान से बनें जो यहां मिलता है। यह थोड़े ही है कि अमरीका से हम कोई सामान लावेंगे। इसपर गौर करने के लिए हमने ये लेबारेटरीज, प्रयोगशालाएं खोलीं।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हमारी नदियों की बड़ी-बड़ी योजनाएं हैं, नदियों पर हमने बड़े बांध बनाये हैं, बिजली के कारखाने बन रहे हैं, दामोदर घाटी, भाखरा-नांगल, हीराकुड वगैरा है, दक्षिण में, बम्बई में चारों तरफ, सिंद्री में खाद बनाने का एक बड़ा भारी कारखाना खोला है, विजिगापट्टम में हमारे समुद्री जहाज बन रहे हैं, बंगलौर में हवाई जहाज बनना शुरू हुआ है। इधर चित्तरंजन में एक कारखाना बड़े-बड़े रेल के इंजन बना रहा है। ये चीजें, रेल के इंजन, आप तो नहीं खरीदते, लेकिन ये बुनियादी चीजें हैं, जिनसे मुल्क की ताकत बढ़ती है। पहले कारखाने हमारी चीजें बनाते थे। फर्ज कीजिये कि कपड़े का कारखाना हुआ। अच्छी चीज है, कोई भी चीज कपड़े की बने, लेकिन वे बुनियादी कारखाने नहीं थे। हम बुनियादी चीजें बना रहे हैं। बम्बई के पास एक मुकाम है अम्बारनाथ। वहां हम मशीन बना रहे हैं। मशीन नहीं बनायें उस वक्त तक आपको मशीन बाहर से खरीदनी होती है। इस तरह की बुनियादी बातें होती हैं। यह सब हुआ और बहुत काफी हुआ और मुल्क को इन बातों के ऊपर काफी गर्व करना चाहिए, लेकिन मैं इससे भी ज्यादा अहमियत देता हूं उन चीजों को जिनका नाम आपने सुना होगा कम्यूनिटी प्रोजेक्ट।

हमने इसको फिलहाल शुरू किया है ५५ जगह हिंदुस्तान भर में। एक-एक जगह कोशिश की है कि एक-एक योजना में तीनसौ गांव लिये जायं। उन तीनसौ गांवो में उनके उठाने का, उन्नति का काम हो। वहां खेती का काम अच्छा हो, वहां बीमारी कम हो, सड़क बनें, स्कूल ठीक बनें, स्वास्थ्य का प्रबन्ध हो। गर्जेकि असल माने इस योजना के हैं कि वहां की जनता उठे। उसका रहने का दर्जा ऊंचा हो जाय। एक और तरह से मैं आपसे कहूं। हम और जगह कारखानों में तरह-तरह का सामान बनाते हैं। इन ग्राम-विकास-योजनाओं से हम इंसानों को बनायें यानी उन्हें बेहतर करें। बने हुए तो हैं वे, उनको उठायें। यह बुनियादी बात है, क्योंकि आखिर कौम नम्बर से तो बढ़ती नहीं। आपकी तादाद ३६

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

करोड़ है। ३६ करोड तो भेड़-बकरी भी होती हैं। यही ३६ करोड़ अंग्रेजों के गुलाम भी रह चुके हैं। इससे तो कोई नतीजा नहीं है कि वे ३६ करोड़ हैं। अगर उनकी हैसियत बढ़े, उनका दिमाग, उनका जिस्म, उनकी काम करने की ताकत बड़े तो एक बहुत जबरदस्त ताकत हो जाती है। चुनांचे असली सवाल मुल्क में हमेशा यह होता है कि वहां के लोगों को बढ़वाना दिमागी तौर से, और हर तरह से। आखिर पढ़ाने-लिखाने के यही माने होते हैं। आपके स्कूल-कालेज और यूनिवर्सिटियों के यही माने हैं, चाहे वे अच्छा काम करें, चाहे बुरा काम करें, यह दूसरा सवाल है। अब हम कैसे एकदम से हिंदुस्तान के करोड़ों आदमियों पर असर डालें, यह बड़ा सवाल है। तो हमने यह ५५ ग्राम-विकास-योजनाएं शुरू कीं अलग-अलग प्रांतों में। ५५ में से ५० में इस वक्त बहुत अच्छा काम हो रहा है। पांच में अच्छा काम नहीं हो रहा है। उम्मीद है, वहां भी होगा, लेकिन ५० में ; और पचास में से बीस-पच्चीस में बहुत अच्छा काम हो रहा है।

वह काम कैसे हो, यह बड़ी पेच की बात आ जाती है, क्योंकि कोई ऊपर से तो करने का है नहीं कि हम किसीको भेज दें ऊपर से हुक्म चलाने को। आखिर गांव के रहनेवाले ही उस काम को करें। अगर वे करते हैं, उनमें उत्साह होता है, तब तो भली बात है, नहीं तो नहीं। ऊपर के लोग क्या करेंगे ? हमने जरूर इसमें पहले दो-तीन महीने लोगों को ट्रेंड किया, ग्राम के कार्यकर्ताओं को हमने सिखाया, एक-दो-तीन महीने का कोर्स दिया। अव्वल तो हमने उनको चुना जो अच्छे थे, जो तेज दिमाग थे, जो काम करना चाहते थे, उनको चुनकर सिखाया। फिर उनको वापस भेजा अपने-अपने गांव में या आसपास के गांव में। दो-दो, चार-चार, पांच-पांच, दस गांव उनके सुपुर्द किये। वे असली काम करनेवाले हैं। उनके काम का अंदाजा इस बात से होता है कि कैसे वे औरों को उत्साह दिलाते हैं और औरों से काम करवा सकते हैं और गांव-गांव को काम के लिए संगठित किस तरह करते हैं।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दो-तीन महीने में ही काफी अच्छी रिपोर्ट हमारे पास आ रही है। जहां-जहां हम गये, देखा भी कि काम अच्छा हुआ है। ५५ जगह हमने किया, पर ५५ जगहों में भी कोई १५,००० गांव आ जाते हैं। इस साल हम इसको बढ़ाना चाहते हैं और चालीस-पचास जगह करें, और १५,००० गांव में, इस तरह से बढ़ते जाना चाहते हैं। लेकिन उतना ही हम बढ़ सकते हैं जितना हिंदुस्तान के लोग बढ़ना चाहें या बढ़ने की कुव्वत रखें। याद रखिये, हम पार्लामेंट में बड़े-बड़े कानून बनायें और कानून की जरूरत होती है, बनने चाहिए, लेकिन कानून से मुल्क नहीं बढ़ते हैं और अगर कानून से मुल्क बढ़ जाते तो हम भी एक कानून बना देते कि चलो, हिंदुस्तान बढ़ गया। कह दें कि हरेक की आमदनी दुगुनी हो जाय तो यह हो नहीं सकता। कानून तो रुकावटें हटाते हैं। लेकिन हिंदुस्तान बढ़ेगा तब, जब हिंदुस्तान के लाखों-करोड़ों आदमी खुद आमादा हों बढ़ने को और काम करें उसके लिए। यह खोज दिमाग में हर वक्त रहती थी कि क्या करें, किस ढंग से करें? इसलिए यह कम्यूनिटी प्रोजेक्ट, ये ग्राम-विकास-योजनाएं शुरू कीं। यह बात आप याद रखें कि ग्राम-विकास-योजनाओं का अधिकतर बोझा हमारे ऊपर पड़ रहा है, मुल्क पर पड़ रहा है। या तो केंद्रीय हुकूमत पर या हमारे प्रांतों की हुकूमत पर असली बोझा पड़ रहा है। जहां-जहां ये ग्राम-विकास की योजनाएं चली हैं, वहां-वहां के आम लोगों ने इसमें काफी दिलचस्पी ली है और पिछले चंद महीनों में सैकड़ों-हजारों मील सड़कें बनी हैं, कितने स्कूल बने हैं, कितने छोटे-छोटे अस्पताल बने हैं, जो कि ग्राम के लोगों ने खुद बनाये हैं और बना रहे हैं। अगर पी० डब्ल्यू० डी० से कहे जाओ कि ये चीजें बनाओ तो बरसों गुजर जायंगे, वे नक्शे ही बनाते रह जायंगे। यहां चटपट काम हुआ है।

अभी हाल में पहाड़ों में ९२ मील लंबी सड़क वहां के रहनेवालों ने बनाई थी, बिल्कुल अपनी मेहनत से। ज़रा-सी उनकी मदद मिल गई, कुछ उधर-उधर पहाड़ के बारूद से, डिनेमाइट से, उड़ाने

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

की, वह हमने दी। बाकी उन्होंने आप बनाई। इस तरह से आप सोचें कि अगर हर जगह हर गांव-वाले कोशिश करें अपने गांव को, या चार गांव मिलकर अपने चार गांवों को उठाने की, तो काम फैल जाता है और फिर इस तेजी से काम होता है कि कोई सरकार उतनी तेजी से नहीं कर सकती है। अगर सरकार को उसका साथ हो, मदद हो एक-दूसरे की, तब मुल्क बहुत तेजी से आगे बढ़ सकता है।

मैंने आपसे कम्यूनिटी प्रोजेक्ट के बारे में कहा। लेकिन दूसरी बात का खाली इशारा किया चाहता हूं, क्योंकि हम उसपर विचार कर रहे हैं। हम एक नक्शा फैलाना चाहते हैं, खाली चुने हुए गांव में नहीं, बल्कि हलके-हलके सारे हिंदुस्तान के देहातों में, जिससे हर दस गांव में हम कुछ इंतजाम करें। इसको अंग्रेजी में कहते हैं 'एक्सटेंशन सर्विस', यानी वहां जरूरी मदद पहुंचायें, चाहे वह एक इंजीनियर की हो, एक डाक्टर की हो, एक पढ़ानेवाले की हो। जो-जो अच्छे लोग हों सलाहकार, उनके नीचे हम वहीं ग्राम-कार्यकर्ताओं को तैयार करके भेजें। दस-दस गांव में यह हो। उसका हमारे इस समय जो संगठन है नीचे से ऊपर तक, उनपर क्या असर पड़ेगा, एकदम से मैं नहीं कह सकता, लेकिन उनका हम वह रंग बदलना चाहते हैं। एक तरह से कम्यूनिटी प्रोजेक्ट चंद जगह चलाये हैं। बिल्कुल वही चीज तो नहीं, लेकिन ज़रा दूसरे ढंग की चीज हम सारे हिंदुस्तान में फैलाना चाहते हैं, जिसमें वह सरकार का तो संगठन हो, पर देहात में ज़रा बदल जाय और आम जनता उसमें आ जाय। अपने-अपने इलाकों को उठाने के लिए और उनकी मदद करने के लिए हमारे ग्राम-सेवक होंगे, सीखे हुए और उनके ऊपर हमारी एक एक्सटेंशन सर्विस होगी। चंद गांव में हमारा डाक्टर हो, इंजीनियर, वगैरा-वगैरा जो होते हैं सब लोग हों। यह तो एक नक्शा-सा होगा। फिर उस नक्शे के भरने में जितना वहां के लोग करें या वहीं की प्रांतीय सरकार कर सके। इसको पूरा मैं आपको समझा नहीं सका। इसकी वजह यह है कि वह पूरा तैयार नहीं हुआ। मैं ज्यादा तफसील में जाना

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नहीं चाहता, लेकिन उसूल हमने उसका स्वीकार किया है और मैं समझता हूं कि यह बात ठीक ढंग से हो तो यह एक बड़ी क्रांतिकारी चीज है। क्रांति मैं कहता हूं। इन्कलाब क्या होता है और क्रांति क्या चीज होती है? यह सिर्फ बचपन का खयाल है कि इन्कलाब लाठी चलाना है या गुल मचाना है। हां, कभी इन्कलाब में लाठी भी चली, बंदूक भी चली, तोप भी चली, यह और बात है। इन्कलाब होता है अपनी समाज को बदलना, हमें अपनी समाज की तरक्की करनी है। समाज के माने सारा देश, सारे देश के रहनेवाले। इन्कलाब का इम्तिहान यह है कि वह क्या चीज समाज की उन्नति में करता है? तेजी से क्या चीज समाज को बदलती है? कहीं कानून से थोड़ा-बहुत हो सकता है, लेकिन आखिर समाज में क्रांति होना तो तभी मुमकिन होता है जब समाज के काम करने के तरीके बदलते जायं, बढ़ते जायं और समाज आगे बढ़े और खुशहाल हो। अगर कोई चीज समाज में परिवर्तन करती है और समाज को तेजी से झुका देती है तो वह बड़ी क्रांतिकारी होती है, बशर्ते कि वह शांति से, इत्मीनान से बगैर हुल्लड़बाजी के हो। हमारे और आपके सामने हिंदुस्तान में बड़े-बड़े सवाल हैं। एक बहुत बड़ा सवाल यह है कि कहांतक एक इतना बड़ा मुल्क, इतनी बड़ी आबादी का मुल्क, प्रजातंत्र के उसूलों से, डेमोक्रेटिक उसूलों से तेजी से बढ़ सकता है? क्या तेजी से बढ़ने के यही माने हैं कि कत्लेआम हो और कुछ लोग दूसरे लोगों पर हावी हों या बहुत बरसों तक आपस में लड़ाई-झगड़ा हो? ये वादे तो हम कर नहीं सकते, न करना चाहते हैं। अबतक कोई मिसाल दुनिया के इतिहास में नहीं है कि इतने बड़े देश में या बड़े-छोटे देश में जहां पूरी डेमोक्रेसी हो, प्रजातंत्र हो, करोड़ों आदमियों को उस रास्ते पर चलाकर उसने तेजी से तरक्की की हो। (१३ अप्रैल, १९५४)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

: ३ :

नया भारत

हम नये भारत को बनायंगे। नया भारत वन रहा है। आपने देखा कि कैसे हलके-हलके पुराने सालों के काम का असर हुआ। आपने देखा कि हमारी जो बड़ी दिक्कतें थीं, खाने के मामले में, वह रफा हुईं, खाने के सामान के दाम घटे और कहीं ज्यादा पैदावार हुई। आपने देखा कि हमारे कारखानों की पैदावार बढ़ती जाती है। आखिर हिंदुस्तान की गरीबी दूर होगी तो इसी तरह से कि हिंदुस्तान में दौलत पैदा हो। दौलत के माने सोना-चांदी नहीं। यह तो साहूकार, व्यापारियों का खेल है। दौलत है वह जो मुल्क में पैदा होती है—जमीन से, कारखाने से और घरेलू उद्योग-धंधों से, कारीगरी से, गर्जेकि इन्सान की मेहनत से। इस तरह की दौलत हमें पैदा करनी है। दौलत अधिक पैदा हुई है जमीन से। उसने खाने के मसले को हल किया। कारखानों की पैदावार बढ़ती जाती है। नये-नये कारखाने खुले हैं। आपने देखा होगा या सुना होगा कि दरियाओं की बड़ी-बड़ी योजनाएं भी चाहे वह भाखड़ा-नांगल हो, कोई और हो, खात्मे पर आ रही हैं। उनसे जनता को लाभ होगा। इस तरह ३५-३६ करोड़ लोग आगे बढ़ जाते हैं। आप देहातों में जाइये। जो योजनाएं वहां आजकल चल रही हैं तरह-तरह की, वे हमें फैलानी हैं और गांवों में और हिंदुस्तान के आदमियों में। अभी हर साल कई करोड़ में फैलाने का तय किया है। इरादा है कि सात वर्षों के अंदर हिंदुस्तान का एक-एक गांव इस योजना में आजाय। हिंदुस्तान में साढ़े पांच लाख गांव है। वहां फैलाने का

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इरादा कोई छोटा इरादा नहीं है। हमारी कौम भी तो छोटी नहीं है। हमें बड़े इरादे करने हैं, बड़े काम करने हैं, बड़ी फतह हासिल करनी है, लेकिन हमारी जीत जो होगी वह किसीके खिलाफ नहीं, किसीको दबाने से नहीं, बल्कि अपनी जीत से हम औरों को भी जिताना चाहते हैं। यही नीति है हमारी हिंदुस्तान के अंदर की और यही नीति है हमारी हिंदुस्तान के बाहर की। (१५ अगस्त, १९५४)

हमारे और आपके लिए यह गरूर और खुशी की बात है कि हमारी आजमाइश दुनिया में हो रही है। इस तरह से आप देखें और अपने हिंदुस्तान को एक नया हिंदुस्तान, नया भारत, बनावें, जो बन रहा है। मैं हिंदुस्तान में चारों तरफ घूमता हूं और देखता हूं। हर तरफ नई-नई चीजें बन रही हैं। बड़ी-बड़ी इमारतें, बड़े-बड़े कारखाने, विज्ञान की बड़ी-बड़ी प्रयोगशालाएं (लेबोरेटरीज), कहीं हवाई जहाज बनते हैं, तो कहीं रेल के इंजन—लोकोमोटिव—बनते हैं। कहीं कुछ, कहीं कुछ। यों तो हर तरह तरक्की हो रही है. लेकिन असली चीज जो हमें बनानी है, वह हिंदुस्तान का इन्सान है। वह बन रहा है।

जैसा कि मैंने कहा, सबसे बड़ी बात जो इस वक्त हिंदुस्तान में हो रही है, वह कम्यूनिटी प्रोजेक्ट (सामुदायिक योजनाएं) और नेशनल ऐक्सटेंशन सर्विस है, जो किसी कदर खामोशी से अपना काम कर रही हैं और जिन्होंने, मैं समझता हूं, हिंदुस्तान के दिलोदिमाग को कुछ पकड़ लिया है। यह सिलसिला हमारे हिंदुस्तान के गांव से शुरू होता है। मुझे यकीन है कि हिंदुस्तान की तरक्की का जब आप अंदाजा लगायेंगे तो जिस गज से आप नापेंगे वह गज देहात का होगा और देहात को अपनायेंगे। अगर हिंदुस्तान का गांव बढ़ता है तो मुझे ज़रा भी फिक्र नहीं कि शहरों का क्या होता है, क्योंकि अगर गांव बढ़े तो शहर तो बढ़ ही जायंगे। लेकिन शहर बढ़े और गांव नहीं बढ़े तो शहर भी तबाह होंगे, गांव भी तबाह होंगे। हिंदुस्तान की आबादी अस्सी फीसदी देहात की है, गांव की है, जो उसीमें रहती है, उसी में काम करती है। चूंकि अंग्रेजी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जमाने में उधर कम ध्यान दिया गया और देहात तरक्की और इल्म की दौड़ में पिछड़ गये, इसलिए हमें अब उनकी तरफ ज्यादा ध्यान देना है। मुझे रंज होता है जब मैं देखता हूं कि हमारे नौजवान लड़के और लड़कियां गांव में जाने से डरते हैं, वहां काम करने से डरते हैं। यह ठीक तरीका नहीं है।

हमें समझना है कि जमाना किधर जा रहा है। जमाने की पुकार हमें सुननी है। पुकार यह कि हमें अपने मुल्क को बनाना है। आजादी हासिल करने के बाद अब हमारे सामने सबसे बड़ा सवाल यही है कि हम मुल्क की गरीबी को निकालकर उसको एक खुशहाल मुल्क बनावें और उसकी जो अस्सी-नब्बे फीसदी आबादी गिरी हुई है, उसे उठावें। सबसे बड़ा सवाल आर्थिक है। चाहे आप हिंदुस्तान को जमीन और पैदावार से देखें, चाहे कारखानों और तिजारत वगैरा की तरफ से देखें, हमें मुल्क को दौलतमंद बनाना है। दूसरी जगह से भीख मांगकर ताकत नहीं आती है। अपनी मेहनत के बल पर, अपनी जमीन से, अपने कारखाने से दौलत हासिल की जा सकती है। इस तरह से मुल्क अपने पैरों पर खड़ा हो सकता है।

आजकल एक शहर की तस्वीर उसके महलों से नहीं देखी जाती, बल्कि उसके टूटे हुए घरों से देखी जाती है। एक शहर कैसा है, उसकी म्यूनिसपैलिटी कैसी है, इसका अंदाजा वहां के मामूली हैसियत के लोगों से लगाया जाता है। अब वह जमाना आया है कि थोड़े-से मुट्ठी भर लोग, जो इस तरह से अपनी दौलत को दिखावें, वे इज्जत नहीं पाते हैं। वे कुछ ऊंचे दर्जे के नहीं, बल्कि कुछ नासमझ समझे जाते हैं। आम आदमी की हैसियत ऊंची हो और वह खुशहाल हो, इस तरह से हमें अपने मुल्क को बनाना है और तेजी से बनाना है। अगर हम अपनी ताकत को नहीं बनावेंगे तो पिछड़ जायंगे। (४ अगस्त, १९५४)

आज की दुनिया में बिगड़ने की बातें बहुत होती हैं, लड़ाई की बातें होती हैं, एक दूसरे पर हमला करने की बातें होती हैं। बड़े-बड़े हथियार जमा किये जाते हैं, बड़ी-बड़ी फौजें तैयार होती हैं। बड़े-बड़े आदमी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मिलते हैं, बड़ी-बड़ी कान्फ्रेंसों और बड़े-बड़े जल्सों में, और आपस में बहस करते हैं कि समझौता हो कि लड़ाई। यह है आजकल दुनिया की हालत। ऐसा वायुमंडल है। एक मानी में दुनिया में दो तरह की बातें हो रही हैं—एक बनाने की, दूसरी बिगाड़ने की। कोई नहीं कह सकता कि आखिर में जीत किसकी होगी—बनानेवालों की या बिगाड़नेवालों की! इस सवाल का जवाब तो बाद में इतिहास देगा। लेकिन जब दो ताकतों में कशमकश है तो ऐसे में जो काम बनाने का होता है, वह अमन की ताकत बढ़ाता है, उसमें जनता की भलाई होती है, वह जनता को खुशहाली की तरफ ले जाता है। इसलिए उससे दुनिया की खिदमत होती है, उन लोगों के लिए तो होती है, जिनके लिए वह काम किया जाता है।

हमारे यहां जो काम भाखड़ा-नांगल में हो रहा है और जिसकी एक बड़ी मंजिल पर हम लोग पहुंच चुके हैं, वह सारी दुनिया के लिए एक भला काम है। आपके और हमारे लिए तो भला काम है ही, क्योंकि इससे हमारे मुल्क को फायदा होगा, लेकिन मैं चाहता हूं कि आप सोचें कि यह औरों के लिए भी भला है।

खाली यही एक काम हिंदुस्तान में नहीं हो रहा है। और भी बड़े-बड़े काम हो रहे हैं। जिस देश या जाति का ध्यान काम की तरफ जाता है, काम में फंसता है, उसको लड़ाई-झगड़े की फुर्सत नहीं होती। वह काम में लगा रहता है। अगर आप लोग काम करते हैं तो आपको भी लड़ाई की फुर्सत नहीं है। जब आदमी काम नहीं करता तो फिर उसका दिल दूसरी तरफ जाता है, उसे दूसरों से जलन होती है। औरों को काम करते और तरक्की करते देखना उसे बुरा लगता है। फिर इससे लड़ाई-झगड़े पैदा होते हैं।

हिंदुस्तान में करोड़ों आदमी तरह-तरह के कामों में लगे हैं। हिंदुस्तान को एक नया देश बनाना बहुत बड़ा काम है। हम भाखड़ा-नांगल योजना की तारीफ करते हैं, लेकिन अगर सारे हिंदुस्तान के सवाल को देखा जाय तो यह एक बहुत छोटा टुकड़ा है, सो मैं एक हिस्सा या उससे भी कम। यह हमसे कहता

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

है कि हिंदुस्तान में बहुत बातें करनी हैं, इसकी ऐसी सौ गुना बड़ी या छोटी योजनाएं और करनी हैं।

(८-८-५४)

मैं पूरी तरह महसूस करता हूं कि जमीन की समस्या हमारी सबसे जरूरी और अहम समस्याओं में से एक है और रहेगी। जमींदारी प्रथा के हटा देने का यह मतलब नहीं है कि हमने जमीन की समस्या को हल कर दिया। इस तरह सोचना गलत है, क्योंकि उसके बाद भी बहुत-सी समस्याएं बाकी रह जाती हैं। इस सिलसिले में मैं भूदान-आंदोलन को बड़े महत्व का समझता हूं। हमारा फर्ज है कि हम इस आंदोलन को ठीक से समझें और इसे कामयाब बनाने में पूरी मदद दें। यह आंदोलन किसी खास पार्टी का नहीं है। हर आदमी को, वह किसी भी दल का हो, उसमें भाग लेना चाहिए। इसमें शक नहीं कि यह एक बड़े अहम और पेचीदे मसले को हल करने का एक अनोखा तरीका है। याद रखिये कि यह एक क्रांतिकारी आंदोलन है। इसलिए नहीं कि इसमें अहिंसात्मक उथल-पुथल है, बल्कि इसलिए कि इसकी वजह से समाज में बुनियादी फर्क पड़ा है। इसमें ऐसी फिजा बनी है कि जिससे हिंदुस्तान की एक बड़ी समस्या के हल को करीब ला दिया है।...

(१८ अप्रैल, १९५४)

कुछ वक्त पहले भाखड़ा-नांगल में काम का एक बड़ा दर्जा, बड़ा सिलसिला खत्म हो गया। वहां से पानी निकलेगा। हजारों मील नहरों में घूमता हुआ बीकानेर की तरफ हजारों मील चलकर राजस्थान के रेगिस्तान में पहुंचेगा और उस रेगिस्तान को आबाद करेगा। यह छोटी बात नहीं है। भाखरा-नांगल दुनिया की खास चीजों में है। हिंदुस्तान को तो छोड़िये, इतना बड़ा काम इस पैमाने पर दुनिया में कम जगह हुआ है। उसका उठाना, इसका करना एक हिम्मत की निशानी है, किसी कौम के लिए। या वह दामोदर घाटी है या हीराकुड है, या दक्खिन में काम हुआ है—सारे हिंदुस्तान में बहुत जगह हो

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रहा है। उसके बड़ेपन को देखिये। जाहिर है, इतने बड़े कामों को उठायें तो बरसों लग जाते हैं। खाली खर्चने में फायदा नहीं होता। बरसों बाद इसका फायदा होता है। लेकिन जब फायदा होता है तो पुश्तों का होता है। सौ बरस, दोसौ बरस, जाने कितनी नस्लें आयंगी-जायंगी और उससे फायदा उठायंगी। यह तो एक बुनियाद हो जाती है मुल्क की तरक्की की। ये बड़े-बड़े काम उठे और बड़े-बड़े काम हलके-हलके पूरे हो रहे हैं। उधर सिंद्री में कारखाना खुला। आप समझते हैं, एक कारखाने के क्या माने हैं? क्या यह कि वहां एक चिमनी खड़ी कर दी और वहां कुछ थोड़ी-सी मशीनें लगा दीं? अगर आप सिंद्री में जायं तो आप देखें कि कारखाना आजकल की दुनिया में कहते किसे हैं। शहर है कारखानों का वह। एक कारखाना शहर बन गया है। इतना बड़ा है। पचासों जबर्दस्त इमारतें उसमें लोहे की खड़ी हैं। मालूम होता है कि एक अजीब, किसी जिन्नों की जगह है। ये चीजें आजकल की हैं जो बनती हैं। आप बैंगलोर जाइये। वहां तरह-तरह के कारखाने हवाई जहाज बना रहे हैं। या चित्तरंजन जाइये, रेल के इंजन बन रहे हैं। या विजिगापट्टम जाइये, जहां हमारे समुद्री जहाज बन रहे हैं। कितनी और चीजें बन रही हैं। लेकिन इन सबके होते हुए भी मैं आपको कहूंगा कि जो असली चीज इस वक्त हिंदुस्तान में हो रही है वह यहां के देहातों में हो रही है। कम्युनिटी प्रोजेक्ट और नेशनल ऐक्सटेंशन सर्विस असल में बुनियादी चीजें हैं, जिनसे कौम उठे। अब हर तरफ से आगे बढ़ने की कोशिश है। माना कि उसमें गलतियां होती हैं, कहीं ठोकर खाकर गिरते हैं, कहीं रुपया बर्बाद करते हैं। लेकिन कौम बढ़ रही है, हिंदुस्तान आगे बढ़ रहा है। और दुनिया देखती है कि हिंदुस्तान बढ़ रहा है। असली चीज तो यह है कि इस नक्शे को आप अपने सामने रखिये। (१ जून, १९५४)

हमने अपने मुल्क में छोटे तथा घरेलू उद्योगों पर ज़ोर दिया है। मेरे दिमाग में इस बात के बारे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

में ज़रा भी शक नहीं है कि सिर्फ़ इसीसे बेकारी को समस्या हल की जा सकती है। मेरे कहने का मतलब है, इसके सुलझाने के लिए और तरीके तो इस्तेमाल किये जायंगे; लेकिन हम उस वक्त तक बेकारी के मसले को नहीं सुलझा सकते जबतक कि छोटे और ग्राम-उद्योगों पर सबसे ज्यादा ज़ोर न दिया जाय और भारी उद्योगों को भी ज्यादा अहमियत न दें। सिर्फ इसी तरह हम पैदावार और रोजगार के मामले में काफी तेजी से आगे बढ़ सकते हैं।

अगर हम अपने उद्योगों को बढ़ाने की बात सोचते हैं तो विदेशों से लगातार मशीनें मंगाते रहने का खयाल छोड़ देना चाहिए। मशीनें यहीं बननी चाहिए। हमारे सरकारी विभाग बाहर से चीजें मंगाने की कोशिश करते हैं और विदेशी चीजों के सस्ता दिखाने का उनका एक अजीब तरीका है। मैं इसे उलटी जहनियत मानता हूं। बाहर से आनेवाली कोई भी चीज भारतीय मजदूर की बनाई हुई चीज से महंगी ही है, चाहे इसकी कीमत विदेशी से दसगुना ज्यादा ही हो। (६-११-५४)

पांच बरस की योजना में हमने हिसाब लगाया कि हमारा खर्च कम-से-कम दो हजार करोड़ रुपये है। फिर हिसाब लगाया कि ज्यादा-से-ज्यादा हमारे यहां कितना हो सकता है टैक्स लगाकर, कर्जा लेकर। कोई पंद्रह सौ या सौलह सौ करोड़ रुपये पड़ा। उसमें चार-पांचसौ करोड़ रुपये की कमी पड़ गई। अब वह कहां से आये? यह तो हमें मंजूर नहीं कि हम अपने काम को धीमा कर दें, यह कहकर कि पैसा नहीं है। फिर पैसा या तो टैक्स लगाकर देश से आ सकता है या विदेश से कर्जा लेकर आ सकता है। विदेश से कोई हमें पैसा दे, हम बड़ी खुशी से लें, क्योंकि जिन बातों में हम रुपया लगा रहे हैं वे ऐसी बातें हैं, जिनसे आमदनी होगी। हम रुपया कर्जा लेकर लगायें तो हमारा लाभ है, नुकसान नहीं। बाहर से हमें मुनासिब शर्तों पर कर्जा मिले तो हम खुशी से लें, लेकिन उसमें एक पेच है और वह यह है कि बहुत ज्यादा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बाहर की मदद पर काम करने से देश कमजोर पड़ जाता है। जैसे अगर आप अपनी टांगों पर न चलें, एक लकड़ी टेककर चलें तो आपकी टांगें मजबूत नहीं होंगी। वहरहाल हमें रुपये की बड़ी जरूरत है। बाहर का हमें सहारा मिले तो हम लेने को तैयार हैं। हां, इस बात को ठीक-ठीक देखें कि उससे हमारी अंदरूनी पालिसी में कोई फर्क न हो और उसका असर न हो।

आखिर में अपने मुल्क में हमें इस ताकत को पैदा करना है या इस पैसे को। कैसे करें ? टैक्स से हो सकता है; लेकिन बहुत ज्यादा गुंजाइश नहीं है टैक्स चारों तरफ बढ़ाने की। कर्ज से हो सकता है, क्योंकि उसमें जनता का भी फायदा है और मुल्क का भी। वह रुपया तनख्वाहों में खर्चने का नहीं है कि खत्म हो जाय। यह तो एक इन्स्वेटमेन्ट है, बड़ी-बड़ी योजनाओं में, जिनसे आइंदा आमदनी हो। सरकार आपसे कर्जा लेगी, चाहे पोस्टल सर्टिफिकेट्स हों चाहे और कुछ। हां, उससे आपको फायदा है। चुनांचे इस वक्त हमारे लिए जरूरी हो गया है कि ज्यादा-से-ज्यादा रुपया हम बचावें, ताकि उसे मुल्क की तरक्की में लगाया जा सके। जैसे लड़ाई के जमाने में रुपया निकालने की कोशिश करते हैं, वैसे ही यह लड़ाई समझिये हिंदुस्तान की गरीबी-बेरोजगारी के खिलाफ। हमारे कम्युनिस्ट भाई शायद यह समझें कि कोई बात ही हो नहीं सकती जबतक कि हम सारी इमारत को गिरा न दें, जबतक झगड़ा-फिसाद न करें, जबतक आजकल का जो संगठन है, सामाजिक, आर्थिक, उसको हम बिल्कुल तोड़ न दें। तब नई इमारत खड़ी करेंगे। अगर ऐसा कोई सोचता है, तो वह बात मुझे पसंद नहीं है, क्योंकि बनी-बनाई इमारत को गिरने देना, यह कोई अक्ल की बात नहीं है। उसको आप सम्भालिये। सारी इमारत को गिराना आसान होता है, बनाने में वक्त लगता है।

देश की दौलत बढ़ानी है, यह असली सवाल है। इसके लिए जाहिर है कि एक अच्छा संगठन होना चाहिए। अगर देश में आपस में लड़ाई हर वक्त रही, एक गिरोह इधर खींचता है, एक उधर खींचता

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

है या आपस में छोटी-छोटी बातों पर झगड़ा करते हैं तो वह संगठित शक्ति देश की तरक्की की तरफ नहीं जा सकती। कैसे जावे ? समझ सकते हैं कि वह आपस के झगड़े में रह जायगी। इसलिए यह जरूरी हो जाता है कि देश में एकता हो, मिलकर चलना हो। इसके माने नहीं हैं कि हरेक आदमी एक ही बात रटे, लेकिन इस बात को मालूम कर ले कि बुनियादी बातों में एकता हो। तीन चीजें हमारे देश में हैं, जो उस एकता में खलल डालती हैं, आज नहीं पहले से खलल डालती रही हैं और जिनकी वजह से हिंदुस्तान को काफी नुकसान पहुंचा है। एक, साम्प्रदायिकता—फिरकापरस्ती, दूसरी प्रांतीयता (प्रोविन्शलिज़्म) और तीसरे जाति-भेद (कास्टिज्म)। ये तीन चीजें हमें खानों-खानों में रखती हैं और हमारे हिंदुस्तान की एकता को कमज़ोर करती हैं, हमारी शक्ति को नष्ट करती हैं। आपस के झगड़ों से साम्प्रदायिकता का बड़ा असर यही हुआ कि हिंदुस्तान के दो टुकड़े हो गये।

मैं समझता था कि इससे लोग समझ जायंगे कि हमारे देश में साम्प्रदायिकता न हो। इधर आप प्रांतों को देखिये। हमारे बड़े-बड़े प्रदेश हैं, शानदार प्रदेश हैं, अलग-अलग उनके इतिहास हैं। लेकिन जहां वे अपनेको एक अलग देश समझने लगें और दूसरे प्रदेश से लड़ाई लड़ने को तैयार हों तब आपका देश कहां रहा ? यह हमारी एक बुनियादी कमजोरी है कि हम बहुत जल्दी अलग-अलग टुकड़ों में हो जाते हैं, अलग-अलग खानों में हो जाते हैं। यह कमजोरी किसी कदर हमारी कांग्रेस में आ जाती है। हम भूल जाते हैं कि हमें बड़े मामलों का मुकाबला करना है। अगर किसीमें दम है तो बहुत काम जो बाकी पड़ा हुआ है, करे। जिस ध्येय को सामने रखकर चला गया, उससे काश्मीर का सवाल फिर ज्यादा पेचीदा हो गया। तो बजाय मदद करने के उन्होंने उसीमें कुल्हाड़ी लगाई। उसीको मैं कहता हूं तंग-खयाली। इस तरह साम्प्रदायिकता, प्रांतीयता और जाति-भेद ये तीन चीजें हैं जो मुमकिन हैं हिंदुस्तान

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

को रोक दें बढ़ने से, नहीं तो और कोई ताकत नहीं रोक सकती। कोई बाहरी ताकत हमारा बढ़ना नहीं रोक सकती है, अगर हममें इत्तिहाद हो, एकता हो। याद रखिये, आजकल की दुनिया एक अजीबोगरीब दुनिया है, क्रांतिकारी दुनिया है, तेज़ी से बदलती है और जो लोग समझते हैं कि हिंदुस्तान ऊपर से बदल जाय अंदर से नहीं, वे बड़े धोखे में हैं।

मैं जब विदेश में जाता हूं तो मैं और लोगों का, यूरोप, अमरीका के लोगों का, ध्यान दिलाता हूं खासकर एशिया की तरफ और कुछ अफ्रीका की तरफ। दो-तीनसौ बरस से यूरोपवाले समझते हैं कि दुनिया का केंद्र वे हैं। लेकिन अब वे यह महसूस करते हैं कि यह सारा कायापलट हो गया है और अब कोई दूसरे देश एशिया के प्रश्नों को बैठे-बैठे बाहर से हल नहीं कर सकते। हिंदुस्तान आजाद हुआ उधर पाकिस्तान आया, लंका आया, बर्मा आया, हिंदचीन आया। चीन के महान देश में क्रांति हुई। अजीब बात तो यह है कि चीन ऐसा बड़ा देश इतना जबरदस्त देश है, लेकिन बाज बड़े देश और संयुक्त राष्ट्र उसको स्वीकार नहीं करते। हिंदुस्तान की तरक्की और दूसरे देशों की परेशानियां देखकर यह जाहिर हो जाता है कि हिंदुस्तान मजबूत रास्ते पर चल रहा है। मुमकिन है कि उतना तेज़ न चल रहा हो, जितना उसे चलना चाहिए, लेकिन वह मजबूत तो है। हर जगह लुढ़कता तो नहीं है, ठोकर तो नहीं खाता, गिरता तो नहीं। अब हमारा आपका काम है इस रास्ते पर इसको तेज करना। अगर हम पूरा इरादा करें, मिलकर चलें तो देश मजबूत हो सकता है, आगे बढ़ सकता है। (जुलाई, १९५३)

हमारा देश बहुत लंबा-चौड़ा है। उससे हमारी ताकत भी बढ़ती है और कमजोरी भी। कमजोरी इसलिए कि इतने बड़े मुल्क में हर तरह के लोग हैं, गलत भी और अच्छे भी। अगर हम ज़रा भी गफलत करें तो गलत खयाल को बढ़ने का मौका मिल जाता है। चुनांचे हमें हर वक्त चौकन्ना रहना पड़ता और

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सामना करना पड़ता है। जाहिर है कि इसकी असली जिम्मेदारी कांग्रेस पर पड़ती है। कांग्रेस के साथ इस काम में कोई और भी शरीक हो तो कोई एतराज नहीं, लेकिन जिम्मेदारी कांग्रेस की है।

लगभग ७० वर्ष हुए कांग्रेस ने एक काम आजादी का उठाया था, वह उसने पूरा किया और हिंदुस्तान को आजाद कर दिया। हिंदुस्तान के इतिहास में कांग्रेस का नाम तो बड़ा भारी है ही, दुनिया के इतिहास में भी इसका नाम आयेगा। कांग्रेस में हजार खराबियां हों, तब भी वह देश के लिए एक जरूरी संस्था है। हम खराबियां दूर करें, उनके खिलाफ लड़ें, यह दूसरी बात है। लेकिन कांग्रेस की खराबी से हम समझें कि कांग्रेस की कोई जरूरत नहीं, वह एक निकम्मी बात है, क्योंकि कांग्रेस की जगह कोई और संस्था वह खास काम जो कांग्रेस का फर्ज है, नहीं कर सकती। कांग्रेस ही एक संस्था है, जो कि इस कदर नाजुक मौके पर, जबकि आजादी आई है, देश को इकट्ठा करके उसकी एकता बढ़ाकर देश को आगे ले जा सकती है। यह भी मैं मानने को तैयार हूं कि कांग्रेस की आगे बढ़ने की गति जितनी तेज होनी चाहिए, उतनी नहीं है। हम उसको पकड़कर तेज करें।

(२५ मई, १९५३)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

: ४ :

बड़े सवाल

बड़ा सवाल जो हिंदुस्तान के सामने आया है, वह आर्थिक सवाल है। हिंदुस्तान में काम पैदा करना है, हिंदुस्तान में ज्यादा धन-दौलत पैदा करनी है, जिससे बेरोजगारी खत्म हो।

हिंदुस्तान की ८० फीसदी आबादी गांवों में रहती है। अंग्रेजी जमाने में गांवों की तरफ ज़रा कम ध्यान था। हमारे शहरों के रहनेवालों ने जो कुछ थोड़ी-बहुत तरक्की की है, वह गांवों के पैसे से की है। जबतक हिंदुस्तान के गांव आगे न बढ़ें तबतक हिंदुस्तान आगे नहीं बढ़ सकता।

पिछले पांच-चार बरस में आप जानते हैं कि हिंदुस्तान की आजादी और पाकिस्तान के अलग होने के बाद मुल्क में खाने के सामान में कमी हो गई, वह काफी मुसीबत का जमाना था। हमारा बेशुमार, सैकड़ों-करोड़ रुपया हमारे मुल्क से बाहर गया, गल्ला, चावल और गेहूं खरीदने में। कहां-कहां दूर-दूर से, अमरीका से, कैनेडा से, आस्ट्रेलिया से गेहूं और चावल आये—ऐसे मुल्क में, जहां कि ८० फीसदी लोग खेती-बारी करते हैं। अजीब तमाशा है। खैर, यह तो हम कर नहीं सकते थे कि खाने की कमी हो और हम बाहर से न लावें और फाके करके मरें। बाहर से बेशुमार सामान हम लाये। फिर हमने अपने सामने पहला सवाल यह रखा कि मुल्क में काफी खाना पैदा हो, क्योंकि खाना काफी हो तो हमारे पैर कमज़ोर न होंगे। मुल्क की बुनियाद कमज़ोर है तो ऊपर बड़ी इमारत कैसे बनावें? हमने इंतजाम किया कि मुल्क

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

में ज्यादा तेजी से गल्ला हो। दो तरह से यह काम किया। एक तो नई जमीन ली, दूसरे खेती की पैदावार बढ़ाई। कोशिश की कि जहां एक एकड़ में दस मन पैदा होता है, वहां पंद्रह मन हो।

जिस बात की तरफ़ मैं आपका ध्यान दिलाना चाहता हूं, वह यह है कि इस बड़ी लड़ाई के मैदान में यानी इस बड़े हिंदुस्तान के खाने के मामले की लड़ाई के मैदान में भारी फतह हुई है।

इसपर सारी दुनिया को आश्चर्य है। सच बात तो यह है कि कुछ हमें भी ताज्जुब है कि हमारी इतनी बड़ी जीत कैसे होगई। इस वक्त हमारे सामने हिंदुस्तान में काफी खाना है। कुछ बाहर से भी आया था। इस साल, लेकिन बाहर के आने के अलावा हमने इतना पैदा किया है कि हमारी सारी जगहें भरी हुई हैं। हमारे खजानों में खाने का बेशुमार सामान भरा पड़ा है और ऐसा इंतजाम है कि अगर बदकिस्मती से फसल खराब हो, बारिश न हो तब भी हमारे पास काफी खाना रहे। असल इत्मीनान हमें जिस बात से है, वह यह है कि जो रफ्तार गल्ला पैदा करने की थी, वह पहले से बहुत काफी बढ़ गई है। असल में हमने जो तरक्की की है वह यह नहीं कि नई जमीन लाये, बल्कि यह है कि जहां दस मन एक एकड़ में होता था, वहां अब कहीं बारह, कहीं तेरह, कहीं पंद्रह मन होता है और बढ़ता जाता है। जहां तक चावल का मामला है, दस मन की जगह बीस और पच्चीस मन होने लगा है।

आप सोचें कि अगर हिंदुस्तान में गल्ले की आम औसत पैदावार बढ़ जाय, दस से पंद्रह हो जाय, जैसे कि हो रहा है, तो इसके माने यह हैं कि हिंदुस्तान भर की पैदावार, दौलत डेढ़ गुनी हो गई। यह काफी बड़ी तरक्की है, जबरदस्त तरक्की है। मगर पंद्रह होने से मुझे संतोष नहीं है। हमें दस का बीस, पच्चीस करना है और ऐसा ही होगा, क्योंकि हमने देख लिया है कि जहां कोशिश होती है, वहां कामयाबी होती है। अपने मुल्क की तरक्की के लिए हमने पांच-साला योजना बनाई थी। तीन बरस हो गये। उससे आप अंदाजा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

करें कि कितना काम हुआ। पहले साल हम बुनियाद डाल रहे थे। दूसरा साल शुरू हुआ तो काम ज़रा नज़र आने लगा। अब मैं काफी इत्मीनान से कह सकता हूं कि उस काम ने बड़े ज़ोरों से जड़ पकड़ी है। और कहां ? लोगों के दिलों में, जहां-जहां यह काम हो रहा है।

मुझे इस वक्त ठीक याद नहीं, लेकिन हर सूबे में सौ-सौ, दो-दोसौ, चार-चारसौ, गांव चुने गए हैं। हमने यह इंतजाम किया है और यह इकरार अपने से किया है कि आज से सात बरस के अंदर हिंदुस्तान के एक-एक गांव में उसकी जड़ पहुंच जायगी। ज़रा आप गौर करें कि कितना बड़ा इकरार है। हिंदुस्तान में साढ़े पांच लाख गांव हैं। आप इन गांवों में सात या साढ़े सात बरस यानी दूसरे पांच बरस के नक्शे के अंदर इस इंतजाम यानी 'नेशनल एक्सटैन्शन सर्विस' को पहुंचायेंगे। इसके यह मानी नहीं कि एक-एक अफसर वहां मुकर्रिर कर दें। यह तो बड़ी आसान बात है। लेकिन इसके मानी यह है कि वहांवाले अपना इंतजाम नये ढंग से अपने हाथ में लें। वहांवाले, वहां के ग्राम-कार्यकर्त्ता तैयार हों, हम उन्हें सिखावें। वहां के डाक्टर और पढ़ानेवालों को सिखावें, कुछ सीखे हुए लोग वहां पहुंचें और गांवों की एक कड़ी बन जायं, उनके और सरकार के बीच में। अबतक हमारे इंतजाम में यह बड़ी खराबी थी कि हम अच्छी-अच्छी हिदायतें देते थे, लेकिन वे ऊपर के खानों में ही रह जाती थीं, नीचे तक नहीं पहुंचती थीं। लेकिन अब हम उनकी कड़ियां बनाते हैं, ताकि फौरन काम हो। कराये कौन ? हमारे अफसर ? नहीं, हम गांवों के लोगों को तैयार करेंगे। उनके ऊपर जिम्मेदारी रहे और हम सलाह दें और मदद दें। कितना बड़ा काम है सात बरस के अन्दर करने का। फिलहाल पांच लाख समझ लीजिये, एक लाख निकाल दीजिये। हर साल ८० हजार गांवों में हमको काम फैलाने का इंतजाम करना है। यह एक जबरदस्त काम है, लेकिन हममें यह देखकर कि हम क्या कर सकते हैं हिम्मत होती है और यकीन है कि हम उस काम को कर डालेंगे।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जब ये पांच-सात बरस गुजर जायंगे और इस तरह का काम मुल्क भर के देहातों मे फैल जायगा, तो वह एक बड़ी क्रांतिकारी और इन्कलाबी बात होगी। शायद बड़े-बड़े इन्कलाबों से यह इन्कलाब बड़ा हो, क्योंकि इन्कलाब और क्रांति के मानी हैं कि हम समाज को बदलें। हम अपनी सियासत को जहां जरूरत है बदलें। अपने आर्थिक तरीकों को, संगठन को बदलें। हम कौम उठायें यह असली क्रांति है, लठवाजी क्रांति नहीं। लाठी तो डाकू भी चलाते हैं। वे क्रांतिकारी तो नहीं होते। हमारे सामने कितने बड़े-बड़े काम हैं। कुछ काम अच्छी तरह हो रहे हैं और कुछ अच्छी तरह नहीं हो रहे हैं, मानता हूं मैं। लेकिन हिंदुस्तान एक बड़ा मुल्क है। कहीं ऊंच है, कहीं नीच है, कहीं कमजोरी है, कहीं ताकत है। अगर आप पूरे नक्शे को देखें तो आप देखेंगे कि हिंदुस्तान के करोड़ों आदमी एक सफर कर रहे हैं, सफर में आगे बढ़ रहे हैं, सफर में एक-दूसरे से कदम आगे बढ़ा रहे हैं, जिससे देश की हिम्मत बढ़ती है। मैं बहुत दावे के साथ कहता हूं कि हमारा मुल्क इस वक्त दुनिया के उन चंद मुल्कों में से है, जो आजाद हैं और इसकी निशानी यह है कि वह जिस रास्ते पर चाहता है, चलता है, न किसीके दबाव में आता है, न पैसे के लालच में। हमारे मुल्क में कई बातें हुईं। स्वराज्य मिला। उसके बाद, हमारे यहां बड़े-बड़े राजा-महाराजा लोग थे, वे अपनी राजगद्दी से हटाये गए, आदर और प्रेम से हटाये गए। तीसरी बात यह हुई कि हमारे देश में जो जमींदारी की प्रथा थी, विशेषकर उत्तर प्रदेश में, उसका अंत हुआ।

ये सब बड़े-बड़े कदम थे, पर इसके यह मानी नहीं कि हमारे सारे प्रश्न हल हो गये। अब हमारे सामने बड़ी यात्रा आगई है; और वह यह कि देश की करोड़ों की जनता आगे बढ़े और उसकी दरिद्रता, गरीबी न रहे, बेरोजगारी न हो, रोजगार सबको मिले, सब काम करके धन पैदा करें, जिससे देश का और उनका भला हो। हमारे देश में किसी दूसरे देश से रुपया तो नहीं आ जायगा, हम अगर आगे बढ़ेंगे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तो अपने परिश्रम से, अपनी मेहनत से। देश में जनता मिलकर जितना कमायेगी, वह देश का धन है। जनता जितना अधिक कमायेगी, उतना ही देश धनी होगा और जनता धनी होगी। आप एक एकड़ में गेहूं लगायें और दस मन पैदा करें, जैसे औसत हमारे देश की है, तो अमरीका में तो पच्चीस मन पैदा करते हैं, तीस मन पैदा करते हैं, एक एकड़ में दुगुना, तिगुना, कहीं-कहीं इससे भी अधिक, तो क्या हम भी न करें ? चाहे जमीन में खाद अच्छी डालें, या अच्छे-अच्छे बीज चुनें। अगर नई बात हम सीख सकते हैं, हमें सीखनी चाहिए, क्योंकि हमारा इसी तरह लाभ होगा। बहुत सारे छोटे-छोटे धंधे हैं, जो हमारे देहातों में हो सकते हैं। उससे कुछ आपकी आमदनी ज्यादा हो, और साथ ही नई चीजें देश में बनें।

देश का धन क्या होता है ? जैसा कि मैं पहले कह चुका हूं, कोई रुपया-पैसा धन नहीं होता। रुपया-पैसा तो एक देश के व्यापार की चीजें हैं, जिसमें हमारे काम सरल हो जायं, दूकानदारी में, व्यापार में, और बातों में। कोई चांदी-सोना खाता-पीता तो नहीं। आपके पास कितना ही सोना-चांदी हो, मगर आपको खाना-पीना न मिले तो आप कैसे रहें ? धन होता है जो पैदा किया जाता है, परिश्रम से, जमीन से, कारखाने से, कारीगरी से। वह धन है, जो लोग अपने काम में ला सकें। हां, कहीं-कहीं सोना-चांदी भी लोग शोभा के लिए अपने हाथ-कान और नाक से लटकाते हैं। लेकिन यह कोई आवश्यक चीज नहीं है। वह साहूकारी की चीज है। हमें देश का धन बढ़ाना है, तो हमें अपनी पैदावार बढ़ानी है, जमीन से, कारीगरी से, घरेलू धंधों से और बड़े कारखानों से। जितनी आवश्यक वस्तुएं हैं देश की, वे सब हम पैदा करें। उसके पैदावार करने में मजदूरी अच्छी मिले, देश में रुपया हो, और वह चीज भी हमारी हो जाय। अबतक क्या होता रहा है ? हमारी अधिकतर चीजें अंग्रेजों के देश से आती थीं। बड़ा पैसा जाता था हमारा।

बहुत वर्ष हुए, महात्माजी ने कहा था, हमें खादी पहननी चाहिए, क्योंकि इसमें दो बातें हैं : एक

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

विदेशी कपड़ा नहीं पहनें, विदेश क्यों अपना रुपया भेजें। दूसरे यह कि हम खादी पहनें, तो खादी का रुपया तो हमारे गांव में जाय, हमारी बहनों को जाय, हमारे जो कपड़ा बुनते हैं, उनको जाय। इस तरह से देश में फैले। इसी तरह से और चीजें हैं। जितनी चीजें हम बनावेंगे और विदेश से नहीं मंगावेंगे उतना ही देश का धन बढ़ेगा।

बड़ी-बड़ी चीजें हैं, उनको आप नहीं बना सकते। फर्ज कीजिये रेलगाड़ी। रेल पर आप चढ़ते हैं, आप रेल को और रेल के इंजिन को तो अपने गांव में नहीं बना सकते। इसके लिए तो बड़े-बड़े कारखानों की जरूरत है। उसको भी अपने देश में बनायें, क्यों विलायत से मंगायें? अभी दो वर्ष हुए, बंगाल में एक बड़ा कारखाना हमने खोला। वहां रेल के इंजिन बनते हैं। नीचे बैंगलौर में रेलगाड़ियां बनती हैं। अब हमारे यहां हवाई जहाज भी बनने लगे। मोटर भी नई-नई बननी शुरू हुई हैं, तो हम विदेशी मोटर को क्यों लें? समुद्र के जहाज भी बनने लगे हैं। बड़े-बड़े लोहे के कारखाने बने हैं, जिससे लोहा बनेगा। लोहे की आप और हम सबको जरूरत होती है। न हो तो आपका हमारा काम रुक जाता है। उधर एक बड़ा कारखाना बना है खाद का, जिसे डालने से जमीन अच्छी हो जाती है। इस तरह से देश में चीजें अधिक बनने लगी हैं। इस-से लोगों को काम मिलता है। दूसरी बात यह कि जनता के पास धन रहता है। उससे जनता की हालत अच्छी होती है। हमें इस काम को बड़े ज़ोरों से बढ़ाना है। सब चीजें, जो देश को आवश्यक हैं, यहीं बनें। सब जनता बनाये और हमारी जितनी जरूरत है, वह हम खुद ही पूरी करें, जिससे देश की दरिद्रता दूर हो, बेकारी दूर हो, बेरोजगारी दूर हो, और हल्के-हल्के देश की शक्ति बढ़ती जाय।

हमारे देश में अधिकतर गांव हैं। १०० आदमियों में से ८० आदमी ग्रामों में रहते हैं। अगर देश की तरक्की हो तो पहली बात देखने की यह है कि हमारे गांव की तरक्की हो। बहुत वर्ष से तो शहर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

की तरक्की होती रही है और बहुत सारे लोग, हमारे युवक—नौजवान, ग्राम छोड़-छोड़कर शहर में जाते रहे हैं। यह बात ठीक नहीं है। जो देखो, दौड़ा-दौड़ा शहर जाता है कि नौकरी मिल जायगी। इससे गांव खराब हो जाता है। हमें हर तरह से गांव की तरक्की करनी चाहिए। इसमें सारे देश का नक्शा समान रखना है, एक जिले का तो नहीं। हमारा काम तो सारे देश को उठाना है। पहले सारे देश में अंग्रेजी राज्य था। जब अंग्रेजी राज्य हटा तो सारे देश में स्वराज्य आया। इस तरह सारा देश चलता है, यह तो नहीं कि इलाहाबाद का जिला और हंडिया की तहसील कहीं अलग हो जाय। यह सारा देश हमारा है, और सारा देश आगे बढ़ेगा तो आप भी आगे बढ़ेंगे, हम भी बढ़ेंगे। महात्माजी ने हमें दो-चार बड़े सबक सिखाये। सबसे पहली बात एकता की थी, सारे देश की एकता की। चाहे देश में हम कहीं रहें और हमारा कोई धर्म या जाति हो, हमें बराबर के बर्ताव से चलना है। जातिभेद हमें कम करना है। जो चीजें हमें अलग करें वे बुरी हैं। हम एक बड़े परिवार में रहते हैं। इस परिवार में छत्तीस करोड़ लोग हैं, यानी सारा भारत एक परिवार समझो।

दूसरा सबक मिलकर काम करना। बगैर काम करे तो कुछ होता ही नहीं। हम देश को बदलना चाहें तो बैठकर खाली प्रार्थना करें, मंत्र जपें, उससे देश नहीं बदलता। आप जरूर प्रार्थना करें, दुआ मांगें लेकिन परिश्रम से, काम से देश बढ़ता है। हमने परिश्रम से, काम से, त्याग से स्वराज्य लिया। बैठे-बैठे हाथ पर हाथ रखकर नहीं। तो काम से हम बढ़ेंगे, लेकिन जब लोग मिलकर काम करते हैं, तो इसमें जादू आ जाता है। बड़ी शक्ति आ जाती है। जैसे महात्माजी ने हममें बड़ी ताकत डाली थी, ऐसे ही हमारे सामने बड़ा काम है—जनता को उठाना—मेहनत से, एकता से।

आपको जिस बात को समझना है वह यह है कि हम देश को अपने परिश्रम से ही उठा सकते

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हैं। हां, सरकार ठीक करे, ठीक-ठीक कानून बनाये, लेकिन सरकार कितना ही अच्छा काम करे, इतना बड़ा देश नहीं उठ सकता जबतक कि देश की जनता अपने परिश्रम से इसे न उठाये। अगर सरकार का काम और जनता का काम मिलकर चले तब अच्छी तरह तेजी से तरक्की हो। सरकारी अफसर हैं। अंग्रेजी सरकार के जमाने में तो वे मालिक थे। अब वे आपके साथी हैं। ठीक है, उनका काम है कि वे ठीक-ठीक इंतजाम करे, कहींपर गड़बड़ न हो। उनका दूसरा काम यह है कि वे जनता की सेवा करें और जनता और वे मिलकर काम करें। अपने जिले में, प्रांत में काम करें, तरक्की हो। आपके सामने यह काम है।

आपके यहां ग्राम-सभाएं बनीं, और ग्राम-सभा में ग्राम-पंचायत है, अदालती पंचायत। अगर ग्राम-सभा मजबूत हो तो ग्राम मजबूत है। जनता मजबूत है तो उसके ऊपर की जड़ भी मजबूत हो जाती है। ग्राम-सभा तो नींव है, बुनियाद है। अगर हम नये भारत का बड़ा मकान बनायें तो उसकी नींव मजबूत करनी चाहिए और उसकी नींव ग्राम-सभा है। अब ग्राम-सभा में एक अदालत बनी, उससे आपको कुछ अधिकार मिले।

लेकिन जो असल काम ग्राम-सभाओं का है, वह खाली अदालती नहीं है, वह तो ग्राम को उठाना है। जो पचासों काम ग्राम की जनता के हैं, उनको करना और करवाना है। एक-एक गांव को इस बात की ख्वाहिश होनी चाहिए कि हम अपने गांव को खूब बढ़ायें और अपने पड़ौसी गांव से और आगे बढ़ जायं। इस तरह से ग्राम-सभाएं मिलकर काम करें तब तरक्की हो। इसमें सरकारी मदद होगी। यह बात आप समझ लें।

मुझे बिल्कुल अच्छा नहीं लगता कि हमारे नौजवान गांव को छोड़-छोड़कर शहर भागें, और वहां टक्करें खायें। उनको तो गांव मजबूत करना है, चाहे वह स्कूल या कालेज में पढ़कर आयें। ग्राम को सुंदर बनाना है, ग्राम में नये-नये काम शुरू करने हैं। इस तरह से सब लोग करें तो बहुत जल्दी देश का नक्शा बदल जाय। हमारे कार्यकर्त्ताओं का काम है कि वे अच्छी तरह सारी बातों को समझें और

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

समझकर फिर गांव-गांव में समझायें। फिर एक-एक गांव मिलकर सोचे कि उस गांव को क्या-क्या करना है, क्या कहीं सड़क बनानी है, विद्यालय बनाना है, दवाखाना बनाना है या पंचायतघर। कोई जरूरत नहीं कि हाथ-पर-हाथ रखकर आप बैठे रहें कि कोई लखनऊ से आये या दिल्ली से, आपका पंचायत-घर बना दे। क्यों नहीं आप बना डालें? हां, इसमें सहायता सरकारी भी मिले, यह और बात है। इसी तरह से हमें काम करना है। इस काम में सबों, यानी पुरुष और स्त्री दोनों, को हाथ बंटाना है। देश की आधी रहनेवाली तो स्त्रियां हैं। अगर वे देश के काम में नहीं पड़ेंगी तो देश पिछड़ जायगा। उनको भी हिस्सा लेना है। हमारी छोटी-छोटी लड़कियों को भी स्कूल में जाकर पढ़ना है, काम सीखना है, फिर अपने घर में ठीक-ठीक काम करना है। सब मिलकर इस बड़े काम को करें, तो सब हाथ-में-हाथ मिलाकर आगे बढ़ेंगे। अगर आपस में लड़े तब तो वहीं-के-वहीं रह जायंगे।...

दुनिया के लिए हमारे बुनियादी उसूल क्या हैं? कई हैं, लेकिन दो खास हैं। एक तो यह कि हर मुल्क आजाद हो और कालोनियलिज्म (उपनिवेशवाद), यानी एक मुल्क की दूसरे मुल्क पर हुकूमत, यह न रहे। यह गलत और नुकसानदेह चीज है। इसमें मुल्क आगे नहीं बढ़ता। हम जिस तरह अपनी आजादी चाहते थे, उसी तरह से औरों की बात भी समझते हैं। दुनिया के अमन के लिए यह एक जरूरी बात है। दूसरा उसूल, जो किसी कदर इसीसे मिला हुआ है, यह है कि जिसे रेंशलिज्म कहते हैं यानी सफेद चमड़े वाले रंग-भेद की नीति के ऊपर हुकूमत करें, या यह नीच है, वह ऊंच है, यह न हो। (२६ मई, १९५३)

नकल करके कोई मुल्क नहीं बढ़ता है। चाहे आप अमरीका की नकल करें, चाहे आप रूस की नकल करें।। हम अमरीका से सीखें जो हमें सीखना है, पर हिंदुस्तान की मिट्टी पर अपने पैर जमाकर। हम रूस से सीखें, चीन से सीखें, लेकिन हमारे पैर जमे हों अपने मुल्क में। अलग-अलग मुल्कों के सवाल अलग-अलग

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

होते हैं। इसलिए हमें अपने सवालों को अपने ढंग से सोचना है और मुल्कों से सीखकर। लेकिन आखिर में अपने जवाब ढूंढ़ने होंगे। ये दोनों तरीके गलत हैं कि हम बाहर से सीखेंगे नहीं, या कि हम आंखें बंद करके बाहर की नकल करेंगे, या बाहर की तारीफ करेंगे, अपनी बुराई करेंगे। (२६ मई, १९५३)

हमारे बुनियादी रास्ते क्या हैं? एक तो हम चाहते हैं कि उत्पादन बढ़े, देश की दौलत बढ़े और दिन-पर-दिन देश का ज्यादा औद्योगीकरण हो। मैं नहीं समझता कि हम बड़े पैमाने पर तरक्की कर सकते हैं, जबतक कि बड़े पैमाने पर हमारे उद्योग न हों. और जबतक नए-से-नए तरीके न अपनायें। बड़े पैमाने से मेरा मतलब बड़े-बड़े उद्योगों से ही नहीं है, बल्कि वे ज्यादा फैले हुए भी हों।

दूसरा रास्ता, जोकि-इतनी ही अहमियत रखता है, रोजगारी से संबंधित है। हम अपने देश में बे-रोजगारी, खासतौर पर बड़े पैमाने पर बेरोजगारी, कायम नहीं रहने दे सकते। रोजगार दिलाना न सिर्फ एक फर्ज है, बल्कि एक सामाजिक आवश्यकता भी है। अगर हम ऐसा नहीं करते तो दोनों तरफ मुसीबत है। हमें यह दोनों पलड़े बराबर रखने हैं, और उन्हें बराबर रखने में कई और बातें पैदा हो जाती हैं, कई और सामाजिक बातों का खयाल करना पड़ता है।...

अगर किसी चीज से बेरोजगारी बढ़ती है तो हमें सोचना होगा कि क्या किया जाय, क्योंकि अगर हम रोजगार नहीं दे सकते तो, पूंजीवादी दृष्टिकोण से भी, खैरात देना हमारा फर्ज है। इंग्लैण्ड और उसके-जैसे दूसरे देशों को यही करना पड़ता है। वे अपनी बढ़ी-चढ़ी पैदावार में से बेकारों को खैरात देते हैं। हम एक करोड़ लोगों को खैरात नहीं दे सकते। वैसे भी, खैरात देना बुरा है। खैरात देने की बजाय काम देना कहीं बेहतर है, हालांकि काम देना ज्यादा खर्चीला हो सकता है। हम पिछड़े हुए तरीके काम में लाकर दुनिया का मुकाबला नहीं कर सकते, और न हम अपने बड़े उद्योगों और मझले उद्योगों

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

में नये तरीके और किसी दूसरे उद्योग में पिछड़े हुए तरीके ही काम में ला सकते हैं। लेकिन ऐसी नीति पर चलना तो बेहतर नहीं है जो हमें एक साथ नहीं, बल्कि जहांतक हो सके, बेरोजगारी की हमारी समस्या को हल करने में मदद न करे। सामाजिक कष्ट और दूसरी बातों के अलावा भी, रोजगार को ज्यादा फैलाना अच्छा है, क्योंकि जब रोजगार ज्यादा फैला हुआ होता है, तो लोगों में खरीदने की ताकत होती है, जिसके कारण अर्थ-व्यवस्था ज्यादा अच्छी तरह चलती है।...

हम फिलहाल खुशकिस्मत हैं कि हमारी अर्थ-व्यवस्था बढ़ती जा रही है, लेकिन अक्सर हम स्थिर अर्थ-व्यवस्था मानकर चलते हैं। बढ़ती अर्थ-व्यवस्था के माने हैं ज्यादा दौलत, ज्यादा खरीददारी और ज्यादा माल पैदा करना। अगर हम स्थिर अर्थ-व्यवस्था मानकर चलते हैं तो हम अर्थ-व्यवस्था के विस्तार पर रोक लगाते हैं।...

एक बात हमें नहीं भूलनी चाहिए। हमारी तरक्की के बावजूद हमारी माली हालत पर बहुत दबाव पड़ रहा है, क्योंकि बड़ी-बड़ी विकास-योजनाएं चल रही हैं और हमारे अनुमानित साधनों और जो हम खर्च करना चाहते हैं, उसके बीच फर्क बना रहता है। आमतौर पर इस फर्क को दूर करने की कोशिश करते हैं, ज्यादा मेहनत से और ज्यादातर बाहरी मदद से। बाहरी मदद मिल सकती है, लेकिन मैं नहीं समझता कि हमें बाहरी मदद पर बहुत ज्यादा भरोसा रखना चाहिए और चूंकि बाहरी दुनिया में बहुतसी नई चीजें हो रही हैं, हो सकता है कि हमारे लिए बाहरी मदद मांगना उचित न हो।

(५ दिसंबर, १९५५)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

: ५ :

'आराम हराम है'

हम लोग (मैं उसमें अपने को भी मिलाता हूं) चाहे कांग्रेस में हों, चाहे संस्थाओं में हों, हमें आदत पड़ गई है कि हम दिमागी पुल बनाया करें। बड़े-बड़े नारे उठावें, बड़े-बड़े प्रस्ताव पास कर दें। बड़े सुन्दर नारे हों, बड़े अच्छे प्रस्ताव हों, लेकिन नारों में और प्रस्तावों में और असली काम में कुछ फासला है, कुछ फर्क है। तकरीरें जोश दिलाती हैं, मगर मदद नदीं करतीं। भाखड़ा-नांगल में आपने सैंकड़ों बड़े-बड़े काम किये। अगर आप लोग खड़े होकर बड़े जोर के नारे लगाते तो काम नहीं हो जाते। वे हुए अकल से, मेहनत से। पुराने जमाने में हमारी एक तरह से ट्रेनिंग हुई। हमने अंग्रेजी हुकूमत से लड़ने में बहुत-सी बातें सीखीं। हमारी ताकत बढ़ी, हिम्मत बढ़ी, मिलकर काम करना सीखा, मुकाबला करना सीखा, कुरबानी करना सीखा। ये बड़ी बातें हैं, लेकिन अब मुल्क आजाद होगया तो किस तरह की जिम्मेदारियां हमारे ऊपर आ गईं ? हमें नए किस्म के काम करने हैं, जो कि खाली नारों से नहीं हो जाते। आपको किसी नदी पर पुल बनाना है तो हरेक कहेगा कि चलो भाई, इसका एक नक्शा बनावें। इंजीनियर लोग नक्शा बनावेंगे, तो पुल बन जायगा। कोई यह नहीं कहेगा कि चलो नारा उठावें तो पुल बन जायगा।

हमने जो पांच बरस की योजना बनाई है, पहली योजना, उसमें बड़े-बड़े सवाल तो सामने थे ही। सबसे बड़ा सवाल यह था कि आजादी हासिल करने के बाद हमारी दूसरी मंजिल क्या है ? वह है

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लोगों की आर्थिक तरक्की, आमलोगों की खुशहाली, मुल्क की गरीबी और बेरोजगारी को दूर करना।

ये बड़े सवाल थे। कितनों के लिए ये हल करने थे ? पैंतीस-छत्तीस-सैंतीस आदमियों के लिए। सारी दुनिया की आबादी के पांचवें हिस्से के लिए, जो हिन्दुस्तान में रहता है। इतनी बड़ी तादाद में लोगों उठाना आप समझ सकते हैं बड़ा सवाल है, पेचीदा सेवाल है। यह सवाल नहीं है कि आप मेरे पास आवें कि कहीं नौकरी दिलवा दें। मैं दो आदमी, दस आदमी, पचास आदमी, सौ आदमी ,हजार आदसी के लिए, फर्ज कीजिए, नौकरी का प्रबंध कर दूं, लेकिन पैंतीस करोड़ के लिए तो नौकरी का इंतजाम नहीं कर सकता। नौकरी मुल्क की गरीबी का इलाज नहीं होता है। इलाज यों होता है कि लोगों को काम मिले, जिससे वे खुद अपनी मेहनत से कोई चीज पैदा करें, देश की धन-दौलत को बढ़ावें। जिस मुल्क के लोग ऐसा करते हैं, वह मुल्क धनी होता है। जिस मुल्क में ज्यादातर लोग ऐसा नहीं करते, वह मुल्क गरीब होता है। लोग चाहे जमीन पर काम करें या और बड़ी-बड़ी योजनाओं में करें मगर काम करें। पैंतीस करोड़ आदमियों को उठाने का काम जादू से नहीं हो सकता।

हमारे देश में बहादुर आदमियों की, वीर पुरुषों कमी नही रही है। अक्लमंद आदमियों की भी कमी नहीं रही। जिस बात की कमी रही है, वह यही कि हमने आपस में मिल कर काम करना नहीं सीखा। अंग्रेज यहां आए। कौन-सी बड़ी फतह उन्होंने की ? वे हिन्दुस्तान के हकूमत के तख्त पर बैठ गये, क्योंकि वह खाली था और हम लोग एक-दूसरे से लड़ते थे।

इससे हमने सबक सीखा, आपस में मिलकर काम करना सीखा। महात्माजी ने उसपर जोर दिया, तब हमारी ताकत बढ़ी और शांति या अमन के तरीकों से हमारी ताकत इतनी होगई कि हमने हिंदुस्तान को आजाद किया। यह इतिहास में एक बड़ी मिसाल है कि शांति और अमन के तरीकों पर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चलने से हमारी ताकत बढ़ी। इस ढंग से हमें चलना है। यह सवाल नहीं है कि जो ऊंचे हैं, उन्हें घसीटकर हम नीचे कर दें। हम तो सबको उठाना चाहते हैं। यह बात सही है कि हमारे समाज में बहुत ऊंच-नीच है; लेकिन यह मुनासिब नहीं है। (८ जुलाई, १९५४)

अगर एक तरफ से देश का धन पैदा होता है जनता के परिश्रम से, दूसरी तरफ से वह खर्च होता है तो जनता वैसी-की-वैसी रहती है। अगर तराजू खर्चने का बढ़ जाता है और आमदनी का जरा हल्का होता है तो हालत खराब होने लगती है और दरिद्रता-गरीबी बढ़ती है। इसलिए कोशिश यह होती है कि वह पलड़ा भारी हो जो देश के धन पैदा होने का है, क्योंकि जितना अधिक पैदा होगा उतना ही अधिक जनता को जा सकता है। देश का धन कैसे आता है? साहूकारी से? नहीं, इससे तो एक की जेब से दूसरे की जेब में चला जाता है। लेकिन रहता उतना-का-उतना है। पैदा होता है जब कोई नई चीज पैदा हो। धन पैदा होता है जमीन से, धन पैदा होता है कारखानों से, कारीगरी से, घरेलू धंधे से। एक बढ़ई एक लकड़ी को लेकर कुर्सी-मेज बनाए तो उसने नया ढंग पैदा किया। लुहार बनाए, उसने नया धन पैदा किया, कारखाने में हजारों कुर्सियां बनीं, वह धन पैदा हुआ। जिस देश में अधिक सामान पैदा में होता है वह धनी देश है। अमरीका धनी गिना जाता है, क्योंकि उसकी जमीन से, कारखानों से बहुत सामान पैदा होता है।

हमारे सामने प्रश्न यह है कि पैदावार कैसे बढ़े ताकि बेकारी कम हो। लोग ध्यान देते हैं सरकारी नौकरी पर, लेकिन उससे कोई सवाल थोड़े ही हल हो जाते हैं। जिस देश में आमलोग—नवयुवक—सरकारी नौकरी की तरफ देखें वह देश पिछड़ा हुआ होता है, क्योंकि इसके मानी हैं कि वहां और पेशे काम करने के नहीं हैं। अंग्रेजी जमाने में तो और सब दरवाजे बंद थे, सब लोग सरकारी नौकरी की तरफ देखते थे, लेकिन हमें नए-नए रास्ते खोलने हैं, जिससे लोग काम करें, धन पैदा करें। सवाल है,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कैसे करें ? उसके करने में रुपया लगाने की जरूरत होती है। कहां से यह रुपया आये ? देश की आमदनी में खर्च करके जो रुपया बचे वह तरक्की में लग सकता है। इन बातों में आप लोग भी मदद करें। यह न समझें कि खाली नारों से और शोर-गुल मचाने से यह हल हो जाता है ।

यह काफी नहीं कि आप आकर मुझसे कह दें कि साम्यवाद या समाजवाद स्वीकार कर लो। चलना फिर भी हमें मेहनत के रास्ते पर पड़ता है। दुनिया में बड़े-बड़े साम्यवादी देश हैं। उन्हें भी दस बरस, बीस बरस, तीस बरस बड़ी मेहनत करनी पड़ी, बड़ी मुसीबत उठानी पड़ी, तब हलके-हलके उन्होंने अपने देश को मजबूत किया और अपनी पैदावार को बढ़ा दिया।

हमारे सामने पिछले चार-पांच बरसों में सबसे बड़ा सवाल खाने का रहा। खाने की कमी देश में कई बातों से होगई। एक तो हिंदुस्तान से वह टुकड़ा अलग हुआ जहां गल्ला पैदा होता था। दूसरी बड़ी वजह यह है कि खानेवाले बढ़ते जाते हैं, पर पैदा करने की शक्ति उतनी नहीं बढ़ी।

याद रखिए कि हम पिछड़ गये हैं इस पिछले सौ-दोसौ बरस में। उधर यूरोप के देशों ने नई-नई बातें सीखीं। विज्ञान के जरिए उनके हाथ में शक्ति आगई। मगर हम विज्ञान में पिछड़ गए। इसलिए बदलती हुई दुनिया में आगे नहीं बढ़े। इससे हमारा देश गरीब होगया, गुलाम हो गया। मगर अब हमें बुनियादी तौर से इस देश के दिमाग को विज्ञान की तरफ डालना है। इसके लिए हमने देश में पिछले पांच बरस में ग्यारह बड़ी-बड़ी उद्योग-शालाएं (साइंटिफिक रिसर्च इन्स्टीट्यूट्स) खोलीं। यह बुनियादी चीज है जिसके ऊपर आप नए देश को बना सकते हैं। रूस का समाजवादी रास्ता आये, चाहे अमरीका का, लेकिन दोनों साइंस के रास्ते पर चलते हैं, दोनों उससे लाभ उठाना चाहते हैं, इसमें फर्क नहीं। हमारे यहां इन्सान बहुत हैं। अगर वे काम करनेवाले हों तो दौलत पैदा करते हैं देश की, अगर बेकार हों तो बोझा है। (७ जुलाई, १९५३)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आमतौर पर एक मुल्क में अलग-अलग रायें होती हैं। होनी चाहिए। मैं नहीं चाहता कि सब भेड़-बकरी की तरह एकराय हों। प्रजातंत्र-वाद में यही होता है और यह उसकी खूबी है। हां, उसके साथ यह भी होता है कि चाहे दस-बीस-पचास राय हों, लेकिन अमल में एक दूसरे की टांग न पकड़ें। मेरा मतलब यह है कि अगर एक दूसरे को रोकने की कोशिश करें तो मुल्क भी आगे ही न बढ़े। डिमोक्रेसी के मानी हैं कि हम एक-दूसरे को समझने की कोशिश करें। जिधर ज्यादा आदमियों की रायें हों, उस रास्ते पर चलें, राय तब्दील करनी हो तो करें। ये तो मुल्क की अंदरूनी बातें हैं। लेकिन आमतौर से जब मुल्क के बाहरी सवाल होते हैं यानी और मुल्कों से अंतर्राष्ट्रीय (इंटरनेशनल) सवाल, तब एक और तरीका होता है, तर्ज होता है, मुल्क के रहनेवालों का। मेरा मतलब यह नहीं है कि सब एक ही राय रखें, लेकिन फिर भी ज्यादातर बातों में एक मुल्क और मुल्कों का सामना मिलकर करता है। अंतर्राष्ट्रीय बातों में, अगर सारा मुल्क पचास आवाजों में बोले तो उसकी ताकत कहां होगी? जब मुल्क और मुल्कों से बोलते हैं तो चाहे अंदर अलग रायें भी क्यों न हों, बाहर एक आवाज सुनाई देती है। एक राय से मुल्क की ताकत होती है। मैं विलायत जाता हूं। या विलायत न भी जाऊं यहां ही और मुल्कों की बाबत, विदेशी नीति की निस्बत मैं कोई बात कहूं। इस बात के कहने में मेरी ताकत क्या है? क्यों उसकी सुनवाई और मुल्कों में होती है इसलिए कि यह समझा जाता है कि कमोबेश मैं हिंदुस्तान के लोगों की राय का इस मामले में इजहार करता हूं। मेरी उसमें शख्सी बात नहीं है। जो भी है, आपकी तरफ से है। इसलिए दुनिया को जब हम मुखातिब करें तो उसके खिलाफ घर में आवाज नहीं उठानी चाहिए। (२६ मई, १९५३)

भविष्य हमें बुला रहा है। हम कहां जायंगे और हमारी क्या कोशिश होगी? हमारी कोशिश होगी आम आदमियों को, भारत के किसानों और मजदूरों को आजादी और मौके दिलाना; गरीबी, अज्ञान और

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रोग से लड़कर उनका अखीर करना, एक खुशहाल जनसत्तात्मक और बढ़ते हुए राष्ट्र का बनाना और ऐसी सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक संस्थाओं की रचना करना, जिनसे कि हरेक मर्द और औरत को इंसाफ मिले और उसकी जिंदगी भरी-पूरी हो। हमारे सामने कठिन काम करने को हैं। जबतक हम अपनी प्रतिज्ञा पूरी नहीं करते, जबतक हम भारत के सभी लोगों को वैसा नहीं बना लेते जैसाकि तकदीर ने तय किया है तबतक हममें से किसीको भी दम लेने का वक्त नहीं है। हम एक ऐसे बड़े मुल्क के नागरिक हैं, जो कि तरक्की के रास्ते पर है, और हमें ऊंचे आदर्श के हिसाब से अपनी जिंदगी बनानी है। हम सभी, चाहे किसी मजहब के हों, हिंदुस्तान की औलाद हैं, और हमारे हक और जिम्मेदारियां बराबर-बराबर हैं। (१५-८-'४७)

जो बुनियादी बातें हमें महात्माजी ने बताईं उन्हें याद रखना है, क्योंकि उसीपर हम आजाद हिंदुस्तान की इमारत मजबूती से ऊंची खड़ी कर सकते हैं। अगर हम इन बातों को भूलें और छोटी बातों मे पड़ें तो फिर हम इतनी दूर नहीं जा सकते। (६ जुलाई, १९५३)

भारत की सेवा का मतलब करोड़ों दुखियों की सेवा है। इसका मतलब गरीबी का खात्मा करना है। हमारी पीढ़ी के सबसे बड़े आदमी की यह ख्वाहिश रही है कि हरेक आंख के हरेक आंसू को पोंछ दिया जाय। ऐसा करना हमारी ताकत से बाहर हो सकता है, लेकिन जबतक आंसू हैं और दुख है, तबतक हमारा काम पूरा नहीं होगा।

इसलिए हमें काम करना है और मेहनत करनी है और कसकर मेहनत करनी है, जिससे हमारे सपने पूरे हों। ये सपने हिंदुस्तान के लिए हैं, लेकिन ये दुनिया के लिए भी हैं, क्योंकि आज सभी मुल्क और लोग आपस में एक-दूसरे से इस तरह गुंथे हुए हैं कि कोई भी बिल्कुल अलग होकर रहने का खयाल नहीं कर सकता।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

श्री जवाहरलाल नेहरू द्वारा लिखित अन्य पुस्तकें

मेरी कहानी (संपूर्ण) सजिल्द ८)

राष्ट्र के लोकप्रिय नेता की जीवन-कहानी : इसमें लेखक ने अपने मानसिक विकास की सही-सही अंकित करने का प्रयास किया है।

मेरी कहानी (संक्षिप्त) २॥)

राष्ट्रनायक की जीवन-कहानी का संक्षिप्त संस्करण

राजनीति से दूर २)

नेहरूजी के उन लेखों का संग्रह, जिनका राजनीति से सीधा संबंध नहीं। रोचक एवं शिक्षाप्रद।

राष्ट्रपिता २)

नेहरूजी द्वारा लिखी गांधीजी की जीवनी और सिद्धांत-व्याख्या।

विश्व-इतिहास की झलक (संक्षिप्त) सजिल्द ६)

'विश्व-इतिहास की झलक' का यह संक्षिप्त संस्करण भी पूर्णता की दृष्टि से संपूर्ण है। जानकारी की कोई भी कड़ी टूटी नहीं है। पक्की जिल्द तथा आकर्षक आवरण पृष्ठ।

हिंदुस्तान की कहानी (संक्षिप्त) २॥)

अहमदनगर किले के बंदीवास में नई दृष्टि से की गई भारत की सभ्यता, संस्कृति एवं इतिहास की सजीव व्याख्या।

हिंदुस्तान की समस्याएं २)

भारत की आज की विविध समस्याओं का विश्लेषण एवं उनका हल। नवीन, परिवर्तित तथा अद्यतन संस्करण।

मुमुक्षु भवन वेद वेदाङ्ग पुस्तकालय
आगत क्रमांक 1809
9613

सस्ता साहित्य मंडल, नई दिल्ली।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

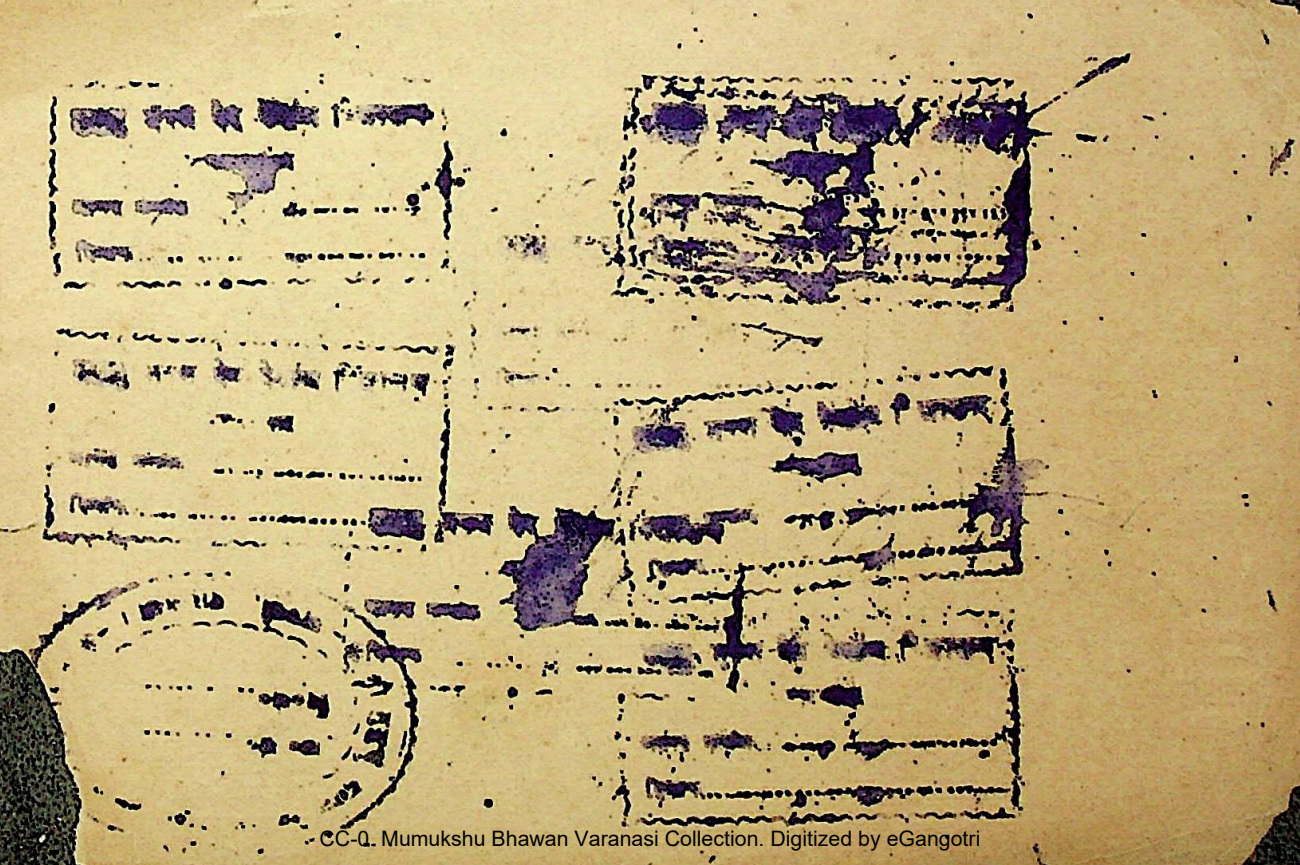

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इस माला की पुस्तकें

१. नया भारत
२. आजादी के दस साल
३. सिंचाई और बिजली
४. गांव के उद्योग-धंधे
५. अन्न-समस्या का हल
६. सामुदायिक योजना
७. श्रमदान

१

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri